وَ مَآ اُبَرِّئُ نَفۡسِیۡ ۚ اِنَّ النَّفۡسَ لَاَمَّارَۃٌۢ بِالسُّوۡٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّیۡ ؕ اِنَّ رَبِّیۡ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ ﴿۵۳﴾ وَ قَالَ
الۡمَلِکُ ائۡتُوۡنِیۡ بِہٖۤ اَسۡتَخۡلِصۡہُ لِنَفۡسِیۡ ۚ فَلَمَّا کَلَّمَہٗ قَالَ اِنَّکَ الۡیَوۡمَ لَدَیۡنَا مَکِیۡنٌ اَمِیۡنٌ ﴿۵۴﴾ قَالَ اجۡعَلۡنِیۡ عَلٰی
خَزَآئِنِ الۡاَرۡضِ ۚ اِنِّیۡ حَفِیۡظٌ عَلِیۡمٌ ﴿۵۵﴾ وَ کَذٰلِکَ مَکَّنَّا لِیُوۡسُفَ فِی الۡاَرۡضِ ۚ یَتَبَوَّاُ مِنۡہَا حَیۡثُ یَشَآءُ ؕ نُصِیۡبُ
بِرَحۡمَتِنَا مَنۡ نَّشَآءُ وَ لَا نُضِیۡعُ اَجۡرَ الۡمُحۡسِنِیۡنَ ﴿۵۶﴾ وَ لَاَجۡرُ الۡاٰخِرَۃِ خَیۡرٌ لِّلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ کَانُوۡا یَتَّقُوۡنَ ﴿۵۷﴾

आयत न० 53 से 57

और (यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कहा कि) **मैं अपने नफ़्स को** (भी) **बरी** (यानी अपने जी को बुराई से पाक) **नहीं बताता** (क्योंकि) **नफ़्स तो** (हर एक का) **बुरी ही बात बताता है सिवाए उस** (नफ़्स) **के जिस पर मेरा रब रहम करे** (और उसमें बुराई का माद्दा न रक्खे जैसा कि पैग़म्बरों के नफ़्स होते हैं)**, बेशक मेरा रब बड़ा मुआ़फ़ करने वाला बड़ी रहमत वाला है**(53) **और** (ये सारी बातें सुनकर उस) **बादशाह ने कहा कि उन को मेरे पास लाओ मैं उन को ख़ास अपने** (काम के) **लिए रखूंगा** (और अज़ीज़ से उन को ले लूंगा बस उन को बादशाह के पास लाए) **बस जब बादशाह ने उन से बातें कीं** (और बातों से और ज़्यादा इल्म व कमाल का पता चला) **तो बादशाह ने** (उन से) **कहा कि तुम हमारे नज़दीक आज** (से) **बड़े इ़ज़्ज़त वाले और भरोसेमन्द हो**(54) (इसके बाद उस ख़्वाब की ताबीर का ज़िक्र आया और बादशाह ने कहा इतने बड़े सूखे का इन्तिज़ाम बड़ा भारी काम है यह काम किस को सौंपा जाए) **यूसुफ़** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि मुल्क के ख़ज़ानों पर मुझ को ज़िम्मेदार बना दो मैं** (उन की) **हिफ़ाज़त** (भी) **रक्खूंगा** (और आमदनी ख़र्च का इन्तिज़ाम और उस के हिसाब-किताब के तरीक़े को भी) **अच्छी तरह जानता हूं**(55) **और** (बादशाह ने कोई ख़ास ओहदा देने के बजाए हर चीज़ का ज़िम्मेदार बना दिया जैसा कि असलीयत में ये ही बादशाह हो गये और वो नाम को बादशाह रहा बस) **इस तरह हम ने यूसुफ़** (अ़लैहिस्सलाम) **को मुल्क** (मिस्र) **का हाकिम बना दिया कि उसमें जहां चाहें रहें** (जैसा कि बादशाह को आज़ादी होती है यानी या तो वो वक़्त था कि पहले कुंए में फिर जेल में क़ैद रहे और या आज आज़ादी और हुकूमत दी गई, बात ये है कि) **हम जिस पर चाहें अपनी महरबानी करदें और नेकी करने वालों का बदला बर्बाद नहीं करते** (यानी दुनिया में भी नेकी का बदला मिलता है चैन की ज़िन्दगी)(56) **और आख़रत का बदला कहीं बेहतर है ईमान वालों और परहेज़गारों के लिए**(57)।

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि किसी गुनाह से बचने की तौफ़ीक़ हो जाए तो उस पर नाज़ न करें और गुनाहगारों को हक़ीर या गिरा हुआ न समझें इसको अपना कमाल नहीं अल्लाह की महरबानी समझें।

وَ جَآءَ اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَ هُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿۵۸﴾ وَ لَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِيْ
بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ اَبِيْكُمْ ۚ اَلَا تَرَوْنَ اَنِّيْۤ اُوْفِي الْكَيْلَ وَ اَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿۵۹﴾ فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِيْ بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ
عِنْدِيْ وَ لَا تَقْرَبُوْنِ ﴿۶۰﴾ قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ اَبَاهُ وَ اِنَّا لَفٰعِلُوْنَ ﴿۶۱﴾ وَ قَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ فِيْ
رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَاۤ اِذَا انْقَلَبُوْۤا اِلٰۤى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۶۲﴾

आयत न० 58 से 62

और (यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने ज़िम्मेदार होने के बाद अनाज की खेती कराना और जमा करना शुरू किया और सात साल के बाद सूखा पड़ा यहां तक कि दूर-दूर से यह ख़बर सुन कर कि मिस्र में हुकूमत की तरफ़ से अनाज मोल मिलता है लोग अनाज लेने आना शुरू हुए) **यूसुफ़** (अ़लैहिस्सलाम के आबाई वतन कनआन में भी सूखा पड़ा तो उन) **के** (सौतेले) **भाई** (भी अनाज लेने के लिए मिस्र में) **आए फिर यूसुफ़** (अ़लैहिस्सलाम) **के पास पहुंचे तो यूसुफ़** (अ़लैहिस्सलाम) **ने** (तो) **उन को पहचान लिया और उन्होंने यूसुफ़** (अलैहिस्सलाम) **को नहीं पहचाना** (क्योंकि उन में बदलाव कम हुआ था और आने वालों से पूछ भी लेते हैं कि कौन हो कहां से आए हो और बिछुड़ने के वक़्त यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम कम उम्र थे इसलिए उन में बदलाव ज़्यादा हो गया था फिर उन के इतने बड़े ओहदे पर पहुंचने की उम्मीद भी नहीं थी)(58) **और** (यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का उसूल था कि एक आदमी को एक ऊंट का बोझ अनाज मोल देते थे बस जब उन का नम्बर आया तो कहने लगे हमारा एक सौतेला भाई और है उन को बाप ने इस वजह से कि उन का एक बेटा गुम हो गया था अपनी तसल्ली के लिए अपने पास रख लिया है उस के हिस्से का अनाज भी दे दीजिए यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कहा कि यह क़ानून के ख़िलाफ़ है उस को ख़ुद आकर अपना हिस्सा लेना चाहिए फिर उन के हिस्से का अनाज भी उन को दिलवा दिया और) **जब यूसुफ़** (अ़लैहिस्सलाम) **ने उन का सामान** (अनाज का) **तैयार कर दिया तो** (चलते वक़्त) **कह दिया कि** (अगर यह अनाज ख़र्च करके फिर आने का इरादा करो तो) **अपने सौतेले भाई को भी** (साथ) **लाना** (ताकि उस का हिस्सा भी दिया जा सके), **तुम देखते नहीं**

कि मैं पूरा नाप कर देता हूं और मैं सबसे ज़्यादा महमानी करता हूं(59) (और) **अगर तुम** (दोबारा आए और अपने) **उस** (भाई) **को मेरे पास न लाए तो** (मैं समझूंगा कि तुम मुझ को धोका देकर अनाज ज़्यादा लेना चाहते थे तो उस की सज़ा में) **न मेरे पास तुम्हारे नाम का अनाज होगा और न तुम मेरे पास आना**(60) **वो बोले** (देखिए) **हम** (जहां तक हो सकेगा) **उस के बाप से उस को मांगेंगे और हम** (उस को लाने के लिए) **कोशिश ज़रूर करेंगे** (आगे बाप की मर्ज़ी पर है)(61) **और** (जब वहां से चलने लगे तो) **यूसुफ़** (अलैहिस्सलाम) **ने अपने नौकरों से कह दिया कि उन का माल** (जिस के बदले उन्होंने अनाज मोल लिया है) **उन** (ही) **के सामान में** (छुपा कर) **रख दो ताकि जब अपने घर जाएं तो उस** (माल) **को** (जब वो सामान में से निकले) **पहचान लें शायद** (यह अहसान करम देख कर) **फिर दोबारा आएं**(62)।

नोटः- चूंकि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अपने भाई को बुलाना चाहते थे इसलिए ये कोशिशें की पहले वादा कि अगर उस को लाओगे तो उस का भी हिस्सा मिलेगा दूसरे धमकी सुना दी कि अगर न लाओगे तो अपना हिस्सा भी न पाओगे तीसरे उन का माल भी वापस कर दिया एक यह कि इस महरबानी की वजह से फिर आएं दूसरे इसलिए कि शायद उनके पास और दाम न हों और इसलिए फिर न आ सकें और जब ये दाम होंगे इन्हीं को लेकर फिर आ सकते हैं।

فَلَمَّا رَجَعُوْۤا اِلٰۤى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَاۤ اَخَانَا نَكْتَلْ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿۶۳﴾ قَالَ هَلْ
اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَاۤ اَمِنْتُكُمْ عَلٰۤى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّ هُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۶۴﴾ وَ لَمَّا فَتَحُوْا
مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ؕ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا مَا نَبْغِيْ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَ نَمِيْرُ
اَهْلَنَا وَ نَحْفَظُ اَخَانَا وَ نَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ؕ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿۶۵﴾ قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا
مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّاۤ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿۶۶﴾

आयत न० 63 से 66

फिर जब (यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई) **लौट कर अपने बाप** (याकूब अलैहिस्सलाम) **के पास पहुंचे** (तो) **कहने लगे अब्बा जान** (हमारी बड़ी महमानी हुई अनाज भी मिला लेकिन आगे के लिए बिना बिनयामीन के ले जाए हुए) **हमारे लिए अनाज की पाबन्दी कर दी गई है सो** (इस सूरत में ज़रूरी है कि) **आप हमारे भाई** (बिनयामीन) **को हमारे साथ भेज दीजिए ताकि** (दोबारा अनाज

लाने में जो रूकावट है वो दूर हो जाए और) **हम** (फिर) **अनाज ला सकें और** (अगर भेजने में आप को कोई ख़तरा हो तो) **हम इन की पूरी हिफ़ाज़त रक्खेंगे**(63) **याक़ूब** (अ़लैहिस्सलाम) **ने कहा कि बस** (रहने दो) **मैं इसके बारे में भी तुम्हारा वैसा ही भरोसा करता हूं जैसे इससे पहले इस के भाई** (यूसुफ़) **के बारे में तुम्हारा भरोसा कर चुका हूं** (यानी दिल तो मेरा गवाही देता नहीं मगर तुम कहते हो कि बिना इसके गये हुए आगे को अनाज न मिलेगा और ज़िन्दगी के लिए अनाज चाहिए और जान बचाना फ़र्ज़ है), **सो** (अच्छा अगर ले ही जाओगे तो) **अल्लाह** (को सौंपता हूं वो ही) **सब से बढ़ कर हिफ़ाज़त करने वाला** (है मेरी देख रेख से क्या होता) **है, और वो सब महरबानों से ज़्यादा महरबान** (है मेरी मुहब्बत और हमदर्दी से क्या होता) **है**(64) **और** (इस बात चीत के बाद) **जब उन्होंने अपना सामान खोला तो** (उसमें) **उन का माल** (भी) **मिला कि उन ही को लौटा दिया गया है, वो कहने लगे कि अब्बा जान** (लीजिए) **और हम को क्या चाहिए, यह हमारा माल भी तो हम ही को लौटा दिया गया है** (ऐसा महरबान बादशाह है और हमें क्या चाहिए बस हमें इजाज़त ही देदीजिए कि भाई को साथ ले जाएंगे और) **अपने घर वालों के वास्ते** (और) **अनाज लाएंगे और अपने भाई की अच्छी तरह हिफ़ाज़त रक्खेंगे और एक ऊंट का बोझ अनाज और ज़्यादा लाएंगे,** (क्योंकि) **यह तो थोड़ा सा अनाज है** (जल्दी ख़त्म हो जाएगा)(65) **याक़ूब** (अ़लैहिस्सलाम) **ने कहा कि** (अच्छा इस हालत में भेजने से इनकार नहीं लेकिन) **जब तक तुम लोग क़सम न खाओ कि उस को मेरे पास** (हिफ़ाजत से) **लाओगे सिवाए इसके कि तुम** (सचमुच) **बेबस हो जाओ, सो जब वो क़सम खाकर अपने बाप को वादा दे चुके तो उन्होंने कहा कि हम लोग जो वादा कर रहे हैं सब अल्लाह के सुपुर्द है** (यानी वो ही हमारे वादे का गवाह है कि सब सुन रहा है और वो ही इस बात को पूरा कर सकता है, इस तरह बिनयामीन को जाने की इजाज़त हो गई)(66)।

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि किसी इन्सान के वादे और हिफ़ाज़त पर पूरा भरोसा करना ग़लती है असल भरोसा सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला पर होना चाहिए इसलिए याक़ूब अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अल्लाह ही सबसे बड़ा हिफ़ाज़त करने वाला है।

وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ وَمَآ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ
اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ؕ

مَا كَانَ يُغْنِىْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَىْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِىْ نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ؕ وَ اِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ
وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَ لَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَيْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّىْۤ اَنَا اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَىِٕسْ
بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٩﴾

आयत न० 67 से 69

और (चलते वक़्त) **याकूब** (अ़लैहिस्सलाम) **ने** (उनसे) **कहा कि ऐ मेरे बेटो** (जब मिस्र में पहुचों तो) **सब के सब एक ही दरवाज़े से मत जाना बल्कि अलग-अलग दरवाज़ों से जाना, और** (यह सिर्फ़ एक कोशिश है बुरी नज़र जैसी चीज़ों से बचने की बाक़ी) **अल्लाह के हुक्म को तुम पर से मैं टाल नहीं सकता, हुक्म तो बस अल्लाह ही का** (चलता) **है,** (इस कोशिश के बावजूद दिल से) **उसी पर भरोसा रखता हूं और भरोसा रखने वालों को उसी पर भरोसा रखना चाहिए** (यानी तुम भी उसी पर भरोसा रखना)(67) **और** (सब रवाना होकर) **जब** (मिस्र पहुंचकर) **जिस तरह उन के बाप ने कहा था** (उसी तरह शहर के) **अन्दर दाख़िल हुए तो बाप की मंशा पूरी हो गई,** (बाक़ी) **उन के बाप का यह मतलब न था कि** (इस तरह) **अल्लाह का हुक्म टल जाएगा** (इसलिए उन पर किसी क़िस्म का ऐतराज़ या शक नहीं किया जा सकता) **लेकिन याकूब** (अलैहिस्सलाम) **के जी में एक बात** (आई) **थी जिस को उन्होंने पूरा कर दिया, और वो बेशक बड़े आलिम थे इस वजह से कि हम ने उन को इल्म दिया था** (तो वो इल्म के ख़िलाफ़ ऐतक़ाद कैसे कर सकते थे) **लेकिन अक्सर लोग इस बात को नहीं जानते** (बल्कि जहालत से इन कोशिशों के असर को सही ऐतक़ाद कर लेते हैं)(68) **और जब ये लोग** (यानी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई) **यूसुफ़** (अ़लैहिस्सलाम) **के पास पहुंचे** (और बिनयामीन को उन से मिलाया तो) **उन्होंने अपने** (सगे) **भाई** (बिनयामीन) **को अपने पास बुला लिया** (और अकेले में उन से) **कहा कि मैं तेरा** (सगा) **भाई** (यूसुफ़) **हूं सो ये लोग जो कुछ** (बदसलूकी) **करते रहे हैं उस का ग़म मत करना** (क्योंकि अब तो अल्लाह ने हम को मिला दिया अब सब ग़म भूल जाना चाहिए। और मैं कोई ऐसी तरकीब करता हूं कि तुम मेरे ही पास रहो)**(69)**।

नोटः- यहां एक बात यह भी मालूम हुई कि इन्सान की नज़र लग जाना और उससे किसी दूसरे इन्सान या जानवर को तकलीफ़ हो जाना या नुक़सान पहुंच जाना हक़ है सिर्फ़ जाहिलाना सोच और वहम नहीं इसलिए हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम को इस की फ़िक्र हुई। रसूले करीम सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने भी इसकी तस्दीक़ की और जिन चीज़ों से पनाह मांगी और उम्मत को पनाह मांगने की नसीहत की है उनमें ये भी है यानी मैं पनाह मांगता हूं बुरी नज़र से। और यह भी बताया कि किसी दूसरे की जान या माल में कोई अच्छी या अजीब बात नज़र आए तो चाहिए कि उसके वास्ते बरकत की दुआ करे और यह भी कि ''माशाअल्लाह लाहौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह'' कहे इससे बुरी नज़र का असर जाता रहता है।

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِيْ رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ ۝٧٠
قَالُوْا وَ اَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّا ذَا تَفْقِدُوْنَ ۝٧١ قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَ لِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّ اَنَا بِهٖ
زَعِيْمٌ ۝٧٢ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْاَرْضِ وَ مَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ۝٧٣ قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗۤ اِنْ
كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ۝٧٤ قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِيْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۝٧٥ فَبَدَاَ
بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ
فِيْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَ فَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ۝٧٦

आयत न० 70 से 76

और जब यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) **ने उन का सामान** (रवानगी का और अनाज) **तैयार कर दिया तो पानी पीने का बर्तन अपने** (सगे) **भाई के सामान में रख**(वा)**दिया फिर** (जब ये चले तो यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के हुक्म से पीछे से) **एक पुकारने वाले ने पुकार कर कहा कि ऐ क़ाफ़िले वालो तुम तो चोर हो(70) वो उन** (तलाश करने वालों) **की तरफ़ मुड़ कर कहने लगे कि तुम्हारी क्या चीज़ गुम हो गई है** (जिस की चोरी का हम पर शक हुआ)**(71) उन्होंने कहा कि हम को बादशाह का प्याला नहीं मिल रहा** (वो गुम है) **और जो आदमी उस को** (लाकर) **देगा उस को एक ऊंट का बोझ अनाज** (इनआ़म) **में मिलेगा और मैं इस** (इनआ़म के दिलवाने) **का ज़िम्मेदार हूं(72) ये लोग कहने लगे अल्लाह की क़सम तुम अच्छी तरह जानते हो कि हम मुल्क में फ़साद फैलाने नहीं आए और हम लोग चोरी करने वाले नहीं** (यानी हमारा ये तरीक़ा नहीं है)**(73) उन** (तलाश करने वाले) **लोगों ने कहा अच्छा अगर तुम झूटे निकले** (और तुम में से किसी के पास चोरी का सामान मिल गया) **तो उस** (चोर) **की क्या सज़ा है(74) उन्होंने** (याक़ूब अलैहिस्सलाम की शरीअ़त के हिसाब से) **जवाब दिया कि उस की सज़ा ये है कि वो जिस आदमी**

के सामान में मिले बस वो ही अपनी सज़ा में (गुलाम बनाकर) **रख लिया जाए, हम लोग ज़ालिमों** (यानी चोरों) **को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं** (यानी हमारी शरीअ़त में ऐसा ही क़ानून है, बस यह बात तय हो जाने के बाद सामान उतरवाया गया)(75) **फिर** (तलाशी के वक़्त) **यूसुफ़** (अलैहिस्सलाम) **ने** (ख़ुद या अपने आदमियों के वास्ते से) **अपने** (सगे) **भाई के** (सामान के) **थैले से पहले दूसरे भाइयों के** (सामान के) **थैलों की तलाशी शुरू की फिर** (अख़ीर में) **उस** (बर्तन) **को अपने भाई के** (सामान के) **थैले से बरामद कर लिया, हमने यूसुफ़** (अलैहिस्सलाम) **को इस तरह** (बिनयामीन के रखने की) **तरकीब बताई,** (और वजह इस की यह हुई कि) **यूसुफ़ अपने भाई को** (मिस्र के) **बादशाह के क़ानून से नहीं ले सकते थे** (क्योंकि वहां की सज़ा दूसरी थी) **मगर यह है कि अल्लाह ये ही चाहते थे** (इसलिए यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के दिल में यह तरकीब आई और उन लोगों के मुंह से यह फ़ैसला निकला) **हम जिस को चाहते हैं** (इल्म में) **ख़ास दर्जो तक बढ़ा देते है, और सारे इल्म वालों से बढ़ कर एक इल्म वाला** (है यनी अल्लाह तआ़ला) **है**(76)।

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि किसी खोई हुई चीज़ या इशतिहारी मुजरिम के पता देने पर इनआम का ऐलान कर देना जाइज़ है।

قَالُوْۤا اِنْ يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِيْ نَفْسِهٖ وَ لَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ
مَّكَانًا ۚ وَ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ۝٧٧ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗۤ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا
نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٧٨ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ۝٧٩ فَلَمَّا
اسْتَيْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ؕ قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَ مِنْ
قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْۤ اَبِيْۤ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَ هُوَ خَيْرُ
الْحٰكِمِيْنَ ۝٨٠ اِرْجِعُوْۤا اِلٰۤى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَ مَا شَهِدْنَاۤ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَ مَا كُنَّا لِلْغَيْبِ
حٰفِظِيْنَ ۝٨١ وَ سْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَ الْعِيْرَ الَّتِيْۤ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ؕ وَ اِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝٨٢

आयत न० 77 से 82

(यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के भाई बिनयामीन के थैले से चोरी का बर्तन बरामद होने पर शर्मिन्दा हुए फिर) **कहने लगे कि** (साहिब) **अगर इसने चोरी की तो** (अचम्भे की बात नहीं क्योंकि) **इस का एक** (सगा) **भाई** (था वो) **भी** (इसी तरह) **इस के पहले चोरी कर चुका है, इस पर यूसुफ़**

(अ़लैहिस्सलाम) **ने बात खोले बिना चुपके से** (यानी अपने जी में) **कहा कि तुम इस बारे में ज़्यादा बुरे हो** (कि कितना बड़ा ज़ुल्म कर चुके हो) **और जो कुछ तुम** (हम दोनों भाइयों के बारे में) **बयान कर रहे हो उस** (की असलीयत) **को अल्लाह तआ़ला अच्छी तरह जानते** (हैं कि हम चोर नहीं) **हैं(77) बस** (जब भाइयों ने देखा कि इन्होंने बिनयामीन को रख लिया तो ख़ुशामद करने लगे और) **कहने लगे ऐ अज़ीज़ इस का एक बहुत बूढ़ा बाप है** (और इसको बहुत चाहता है इसके ग़म में अल्लाह जाने क्या हाल हो और हम से इतनी मुहब्बत नहीं) **सो आप** (ऐसा कीजिए कि) **इस की जगह हम में से एक को रख लीजिए** (और अपना ग़ुलाम बना लीजिए), **हम देखते हैं कि आप बड़े अहसान करने वाले हैं(78) यूसुफ़** (अ़लैहिस्सलाम) **ने कहा ऐसी** (बेइन्साफ़ी की) **बात से अल्लाह बचाए कि जिसके पास हम ने अपनी चीज़ पाई है उस के सिवा दूसरे आदमी को पकड़ कर रख लें** (अगर हम ऐसा करेंगे तो) **इस हालत में तो हम बड़े बेइन्साफ़ समझे जाएंगे(79) फिर जब उन को यूसुफ़** (अ़लैहिस्सलाम) **से तो** (उन के साफ़ जवाब की वजह से) **बिल्कुल उम्मीद न रही** (कि बिनयामीन को देंगे) **तो** (इस जगह से) **अलग होकर आपस में मशवरा करने लगे** (कि क्या करना चाहिए, फिर राय ये हुई कि मजबूरी है सब को वापस चलना चाहिए, मगर) **उन सब में जो बड़ा था उसने कहा कि क्या तुम को पता नहीं कि तुम्हारे बाप तुम से अल्लाह की क़सम खाकर पक्का वादा ले चुके हैं** (इस को अपने साथ वापस लाने के लिए इसलिए कुछ तो कोशिश करना चाहिए) **और इससे पहले यूसुफ़ के बारे में कितनी बड़ी ग़लती कर चुके हो** (वो पुरानी ग़लती क्या कुछ कम थी जो नई बात लेकर जाएं), **सो मैं तो इस मुल्क से उस वक़्त तक नहीं टलूंगा जब तक मेरे बाप मुझ को** (हाज़िरी की) **इजाज़त न दें या अल्लाह तआ़ला इस मुश्किल को सुलझा दे और वो ही सबसे बेहतर सुलझाने वाला है** (यानी किसी तरह बिनयामीन को लेकर जाऊंगा या बुलाया हुआ जाऊंगा)**(80) सो** (मुझ को तो यहां छोड़ दो और) **तुम वापस अपने बाप के पास जाओ और** (जाकर उनसे) **कहो कि अब्बा जान आप के बेटे** (बिनयामीन) **ने चोरी की** (इसलिए पकड़े गये) **और हम तो वो ही बात बयान करते हैं जो हम को पता चली है और हम** (वादा करने के वक़्त) **ग़ैब की बातों के तो जानकार नहीं थे** (कि यह चोरी करेगा वर्ना हम कभी वादा न करते)**(81) और** (अगर हमारे कहने का यक़ीन न हो तो) **उस बस्ती** (यानी मिस्र) **वालों से पूछ ताछ कर**(वा) **लीजिए जहां हम** (उस वक़्त) **मौजूद थे** (जब चोरी का माल बरामद हुआ) **और उस क़ाफ़िले वालों से पूछ लीजिए जिनमें हम शामिल होकर** (यहां) **आए हैं** (उस शहर के और लोग भी अनाज लेने गये होंगे), **और यक़ीन जानिये हम**

बिल्कुल सच कहते हैं (बस ऐसे ही क़िस्सा आकर बयान किया)(82)।

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि अगर कोई सच्चाई पर है और दूसरों को उस पर शक है तो उस को चाहिए कि इस शक को दूर करने की कोशिश करे जैसे यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाइयों ने क़ाफ़िले वालों से तसदीक़ कर लेने की बात कही।

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِىْ بِهِمْ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ
الْحَكِيْمُ ۝ وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰۤاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ۝ قَالُوْا تَاللّٰهِ
تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ۝ قَالَ اِنَّمَاۤ اَشْكُوْا بَثِّىْ وَحُزْنِىْۤ اِلَى اللّٰهِ وَ
اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ يٰبَنِىَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَاْيْــَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ
لَا يَاْيْــَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ۝

आयत न० 83 से 87

याक़ूब (अ़लैहिस्सलाम के पास पहुंचकर उन्होंने वो ही बात कही जो बड़े भाई ने सिखाई थी तो याक़ूब अलैहिस्सलाम) **ने कहा** (कि बिनयामीन ने चोरी नहीं की) **बल्कि तुम ने अपने दिल से एक बात बना ली है, सो** (पहले की तरह) **सब्र ही करूंगा जिसमें शिकायत का नाम न होगा,** (मुझ को) **अल्लाह से उम्मीद है कि उन सब को** (यानी यूसुफ़, और बिनयामीन और जो बड़ा भाई अब मिस्र में रह गया है उन तीनों को) **मुझ तक पहुंचा देगा,** (क्योंकि) **वो** (असलीयत) **अच्छी तरह जानता है** (इसलिए उस को सब का पता है कि कहां-कहां किस हाल में हैं और वो) **बड़ी हिकमत वाला है** (जब मिलाना चाहेगा तो हज़ारों सामान कर देगा)(83) **और** (क्योंकि) **उन से** (दुख पहुंचा था इसलिए) **दूसरी तरफ़ मुंह फेर लिया और** (इस नये ग़म से पुराना ग़म और ताज़ा हो गया इसलिए यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को याद करके) **कहने लगे हाय यूसुफ़ अफ़सोस! और ग़म से** (रोते-रोते) **उन की आंखें सफ़ेद पड़ गईं** (यानी बीनाई जाती रही) **और वो** (ग़म से जी ही जी में) **घुटा करते थे** (84) **बेटे कहने लगे अल्लाह की क़सम** (ऐसा लगता है) **आप यूसुफ़ को याद करना नहीं छोड़ेंगे यहां तक कि बिल्कुल घुल जाओगे या बिल्कुल ही मर जाओगे** (तो इतने ग़म से क्या फ़ाइदा)(85) **याक़ूब** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि** (तुम को मेरे रोने से क्या सरोकार) **मैं तो अपने दुख दर्द की सिर्फ़ अल्लाह से शिकायत करता हूं** (तुम से तो कुछ नहीं कहता) **और अल्लाह की**

बातों को जितना मैं जानता हूं तुम नहीं जानते(86) (क्योंकि यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने जो ख़्वाब देखा था उस की ताबीर अभी पूरी होना बाक़ी थी इसलिए याकूब अलैहिस्सलाम को यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के मिलने का पूरा यक़ीन था और बिनयामीन की रिहाई की कोशिश करने की ताकीद करते हुए कहा) **ऐ मेरे बेटो!** (एक बार फिर सफ़र में) **जाओ और यूसुफ़ और उन के भाई की तलाश करो और अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद मत हो, बेशक अल्लाह की रहमत से वो ही ना उम्मीद होते हैं जो काफ़िर हैं**(87)।

नोटः- हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम को इस सब्र पर शहीदों का सवाब दिया और इस उम्मत में भी जो आदमी भी मुसीबत पर सब्र करेगा उस को ऐसा ही सवाब मिलेगा।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَ اَهْلَنَا الضُّرُّ وَ جِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَ
تَصَدَّقْ عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿۸۸﴾ قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَ اَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ
جٰهِلُوْنَ ﴿۸۹﴾ قَالُوْۤا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ؕ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَ هٰذَاۤ اَخِىْ ۫ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ؕ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَ
يَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۹۰﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَ اِنْ كُنَّا لَخٰطِئِيْنَ ﴿۹۱﴾ قَالَ لَا
تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۫ وَ هُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۹۲﴾

आयत न० 88 से 92

फिर (हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम के हुक्म से मिस्र पहुंचे ताकि पहले बिनयामीन की रिहाई की कोशिश करें तो) **जब यूसुफ़** (अ़लैहिस्सलाम) **के पास** (जिस को अज़ीज़ समझ रहे थे ख़ुशामद के लिए) **पहुंचे** (और अनाज की भी ज़रूरत थी इसलिए पहले अनाज के बहाने बात शुरू की और) **कहने लगे ऐ अज़ीज़ हम को और हमारे घर वालों को** (सूखे की वजह से) **बड़ी तकलीफ़ पहुंच रही है** (चूंकि ग़रीबी में अनाज ख़रीदने के लिए पूरा मोल चुकाने के लिए पूरे दाम भी नहीं) **हम कुछ ये निकम्मी चीज़ लाए हैं सो आप** (अहसान करते हुए) **पूरा अनाज दे दीजिए और हम को ख़ैरात** (समझ कर) **दे दीजिए, बेशक अल्लाह तआ़ला ख़ैरात देने वालों को बड़ा बदला देता है** (अगर मोमिन है तो आख़रत में भी वर्ना दुनिया ही में)(88) **यूसुफ़** (अ़लैहिस्सलाम) **ने** (जो उन की दर्दभरी

बातें सुनीं तो रहा न गया और) **कहा** (बताओ) **वो भी तुम को याद है जो कुछ तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ** (बर्ताव) **किया था जब कि तुम्हारी जहालत का ज़माना था** (और बुरे भले की सोच न थी)(89) **कहने लगे क्या सचमुच तुम ही यूसुफ़ हो** (क्योंकि उन को यूसुफ़ से क्या वास्ता फिर उनके बड़े रूतबे पर पहुंचने की ताबीर तो थी ही इसलिए इस तरफ़ ध्यान गया), **उन्होंने कहा** (हां) **मैं यूसुफ़ हूं और यह** (बिनयामीन) **मेरा** (सगा) **भाई है हम पर अल्लाह तआ़ला ने अहसान किया** (कि हम दोनों को पहले सब्र और परहेज़गारी की तौफ़ीक़ दी फिर उस की बरकत से हमारी तकलीफ़ को आराम से बदल दिया), **बेशक जो आदमी गुनाहों से बचता है और** (मुसीबत पर) **सब्र करता है तो अल्लाह तआ़ला ऐसे नेक काम करने वालों का बदला बर्बाद नहीं करता(90) वो** (सभी पिछली बातों को याद करके पछताए और ग़लती मान कर) **कहने लगे अल्लाह की क़सम कुछ शक नहीं तुम को अल्लाह तआ़ला ने हम पर बड़ाई दी** (और तुम इसी लाइक़ थे) **और** (हमने जो कुछ किया) **बेशक हम** (इसमें) **ग़लती पर थे** (अल्लाह के लिए मुआ़फ़ कर दो)(91) **यूसुफ़** (अ़लैहिस्सलाम) **ने कहा कि** (मैं तुम से बदला तो क्या लेता बल्कि) **तुम पर आज** (मेरी तरफ़ से) **कोई इल्ज़ाम नहीं** (बेफ़िक्र रहो मेरा दिल साफ़ हो गया), **अल्लाह तआ़ला तुम्हारी ग़लती मुआ़फ़ करे और वो सब महरबानों से ज़्यादा महरबान है** (तौबा करने वाले की ग़लती मुआ़फ़ कर ही देता है, इसी दुआ़ से ये भी पता चल गया कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने भी मुआ़फ़ कर दिया)(92)।

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि जब इन्सान की मुसीबत दूर करके अल्लाह तआ़ला अपनी नेमत देदें तो इन्सान को पिछली मुसीबतों का ज़िक्र करने के बजाए अल्लाह तआ़ला के इस इनआम व अहसान को याद करना चाहिए जो अब हासिल हुआ है। मुसीबतों से छुटकारा और नेमतें मिलने के बाद भी पिछली तकलीफ़ व मुसीबत को रोते रहना नाशुक्री है।

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٩٣ وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ
قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّيْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَاۤ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ۝٩٤ قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ۝٩٥ فَلَمَّاۤ اَنْ
جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّيْۤ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٩٦ قَالُوْا
يٰۤاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَاۤ اِنَّا كُنَّا خٰطِئِيْنَ ۝٩٧ قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ۗ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝٩٨

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَ قَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾ وَ رَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى
الْعَرْشِ وَ خَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَ قَالَ يٰۤاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ ۫ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ؕ وَ قَدْ اَحْسَنَ بِيْۤ
اِذْ اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَ جَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَ بَيْنَ اِخْوَتِيْ ؕ اِنَّ رَبِّيْ
لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿١٠٠﴾

आयत न० 93 से 100

अब (भाइयों से राज़ खुल जाने के बाद यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अपने बाप से मिलने की फ़िक्र हुई ज़िम्मेदारी की वजह से ख़ुद तो जा नहीं सकते थे इसलिए सब घर वालों का बुला लेना ठीक समझा और कहा अब) **तुम** (मेरे बाप को जाकर ख़ुशख़बरी दो और) **मेरा यह कुर्ता** (भी) **लेते जाओ और इसको मेरे बाप के चेहरे पर डाल दो** (इससे) **वो देखने लगेंगे** (और यहां आजाएंगे), **और अपने** (बाक़ी) **घर वालों को** (भी) **सब को मेरे पास ले आओ(93) और जब** (कुर्ता लेलिया और) **क़ाफ़िला** (मिस्र शहर से) **चला** (जिसमें ये लोग भी थे) **तो उनके बाप ने** (पास वालों से) **कहना शुरू किया कि अगर तुम मुझ को बुढ़ापे में बहकी बातें करने वाला न समझो तो एक बात कहूं कि मुझ को तो यूसुफ़ की ख़ुशबू आ रही है(94)** (पास वाले) **कहने लगे बख़ुदा आप तो अपनी उसी पुरानी ग़लत सोच में पड़े हैं** (कि यूसुफ़ ज़िन्दा हैं और मिलेंगे इसी सोच से अब ख़ुशबू का वहम हो गया है बस याक़ूब अलैहिस्सलाम चुप हो गये)**(95) फिर जब** (यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के सही सलामत होने की) **ख़ुशख़बरी लाने वाला** (कुर्ता लेकर यहां) **आ पहुंचा तो** (आते ही) **उसने वो कुर्ता उनके मुंह पर लाकर डाल दिया बस** (आंखों को लगना था और दिमाग़ में ख़ुशबू पहुंचना कि) **फ़ौरन ही उन की आंखें खुल गईं** (यानी दिखाई देने लगा और उन्होंने सारी बात आप को सुनाईं), **आप ने** (बेटों से) **कहा क्यों मैंने तुम से कहा न था कि अल्लाह की बातों को जितना मैं जानता हूं तुम नहीं जानते** (और इसलिए मैंने तुम को यूसुफ़ को तलाश के लिए भेजा था)(96) **सब बेटों ने** (उस वक़्त) **कहा अब्बा जान हमारे लिए** (अल्लाह से) **हमारे गुनाहों की मुआ़फ़ी की दुआ़ कीजिए** (हमने जो कुछ आप को यूसुफ़ के बारे में तकलीफ़ दी) **हम बेशक ग़लती पर थे** (मतलब यह कि आप भी मुआ़फ़ कर दीजिए और अल्लाह से दुआ़ भी)(97) **याक़ूब** (अ़लैहिस्सलाम) **ने कहा जल्दी ही तुम्हारे लिए अपने रब से मुआ़फ़ी की दुआ़ करूंगा, बेशक वो बड़ा मुआ़फ़ करने वाला रहम करने वाला है** (और इसी से उन का मुआफ़ करना भी पता चल गया)(98) **फिर**

जब सब के सब यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) **के पास पहुंचे तो** (वो उन्हें लेने शहर के बाहर आए और) **उन्होंने अपने मां बाप को अपने पास** (इ़ज़्ज़त की) **जगह दी और कहा सब मिस्र में चलिये** (और) **इन्शाअल्लाह** (वहां) **अमन-चैन से रहिए** (बस सब ग़म जाते रहे और सब शहर में पहुंचे)(99) **और** (वहां पहुंच कर इ़ज़्ज़त से) **अपने मां बाप को** (शाही) **कुर्सी पर ऊंचा बिठाया और** (उस वक़्त सब के दिलों पर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ऐसी बड़ाई छाई कि) **सब के सब उन के सामने सजदे में गिर गये, और** (यह हालत देख कर) **वो कहने लगे अब्बा जान ये मेरे ख़्वाब की ताबीर है जो पहले ज़माने में देखा था** (कि सूरज व चान्द और सितारे मुझ को सजदा करते हैं), **मेरे रब ने उस** (ख़्वाब) **को सच्चा कर दिया, और मेरे साथ** (एक) **उस वक़्त अहसान किया जिस वक़्त मुझ को क़ैद से निकाला** (और हुकूमत के रूतबे तक पहुंचाया) **और** (दूसरा यह इनआम किया कि) **शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के बीच में फूट डलवादी थी** (जिस वजह से उम्र भर भी एक न होते मगर अल्लाह की महरबानी है कि) **इसके बावजूद वो तुम सब को बाहर से** (यहां) **ले आया** (और सब को मिला दिया), **बेशक मेरा रब जो चाहता है उस को** (ऐसे) **हिसाब से कर देता है** (कि किसी को पता भी नहीं चलता), **बेशक वो बड़ा इल्म और हिकमत वाला है(100)।**

नोटः- यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के मां बाप और भाइयों ने जो उनके सामने सजदा किया उसके बारे में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास कहते हैं कि यह शुक्र का सजदा था जो अल्लाह के लिए किया गया था, यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को नहीं था। और कुछ हज़रात ने कहा कि इबादत का सजदा तो हर पैग़म्बर की शरीअ़त में अल्लाह के सिवा दूसरे के लिए हराम था लेकिन इ़ज़्ज़त का सजदा पहले पैग़म्बरों की शरीअ़त में जाइज़ था जो शरीअते इस्लाम में शिर्क का वास्ता होने की वजहसे मना कर दिया गया जैसा कि हदीस में आया है।

رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِىْ مِنَ الْمُلْكِ وَ عَلَّمْتَنِىْ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۟ اَنْتَ وَلِيّٖ فِى
الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِىْ مُسْلِمًا وَّ اَلْحِقْنِىْ بِالصّٰلِحِيْنَ ۝

आयत न० 101

(फिर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने दुआ़ की) **या रब मेरे आप ने मुझ को** (हर तरह की नेमतें दीं जैसे) **हुकूमत का बड़ा हिस्सा दिया और मुझ को ख़्वाबों की ताबीर देना सिखाया, ऐ आसमानों**

और ज़मीन के पैदा करने वाले आप मेरे रखवाले हैं दुनिया में भी और आख़रत में भी (बस जिस तरह दुनिया में मेरे सारे काम बना दिये इसी तरह आख़रत के काम भी बना दीजिए कि) **मुझ को इस्लाम की हालत पर मौत देना और ख़ास नेक बन्दों में शामिल कर दीजिए** (यानी मेरे बुज़ुर्गों में जो पैग़म्बर हुए हैं उन में मुझ को भी पहुंचा दीजिए)(101)।

नोटः- यहां मालूम हुआ कि ईमान व इस्लाम पर ख़ातमे की दुआ़ करना नबियों की सुन्नत है।

ذٰلِكَ مِنۡ اَنۡۢبَآءِ الۡغَيۡبِ نُوۡحِيۡهِ اِلَيۡكَ ۚ وَمَا كُنۡتَ لَدَيۡهِمۡ اِذۡ اَجۡمَعُوۡۤا اَمۡرَهُمۡ وَهُمۡ يَمۡكُرُوۡنَ ﴿۱۰۲﴾ وَمَاۤ اَكۡثَرُ
النَّاسِ وَلَوۡ حَرَصۡتَ بِمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۰۳﴾ وَمَا تَسۡـَٔلُهُمۡ عَلَيۡهِ مِنۡ اَجۡرٍ ؕ اِنۡ هُوَ اِلَّا ذِكۡرٌ لِّلۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۱۰۴﴾ وَكَاَيِّنۡ مِّنۡ
اٰيَةٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ يَمُرُّوۡنَ عَلَيۡهَا وَهُمۡ عَنۡهَا مُعۡرِضُوۡنَ ﴿۱۰۵﴾ وَمَا يُؤۡمِنُ اَكۡثَرُهُمۡ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمۡ
مُّشۡرِكُوۡنَ ﴿۱۰۶﴾ اَفَاَمِنُوۡۤا اَنۡ تَاۡتِيَهُمۡ غَاشِيَةٌ مِّنۡ عَذَابِ اللّٰهِ اَوۡ تَاۡتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغۡتَةً وَّهُمۡ لَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿۱۰۷﴾
قُلۡ هٰذِهٖ سَبِيۡلِىۡۤ اَدۡعُوۡۤا اِلَى اللّٰهِ ؔ عَلٰى بَصِيۡرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِىۡ ؕ وَسُبۡحٰنَ اللّٰهِ وَمَاۤ اَنَا مِنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ﴿۱۰۸﴾ وَمَاۤ
اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوۡحِىۡۤ اِلَيۡهِمۡ مِّنۡ اَهۡلِ الۡقُرٰى ؕ اَفَلَمۡ يَسِيۡرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ فَيَنۡظُرُوۡا كَيۡفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ؕ وَلَدَارُ الۡاٰخِرَةِ خَيۡرٌ لِّلَّذِيۡنَ اتَّقَوۡا ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۱۰۹﴾

आयत न० 102 से 109

यह क़िस्सा (जो ऊपर बयान किया गया) **ग़ैब की ख़बरों में से है** (क्योंकि आप के पास कोई वास्ता इसके जानने का नहीं था सिर्फ़) **हम** (ही) **वही के वास्ते से आप को यह क़िस्सा बताते हैं और आप उन** (यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाइयों) **के पास उस वक़्त मौजूद न थे जब कि वो साज़िश करके** (यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को कुए में डालने का) **अपना इरादा पक्का कर चुके थे**(102) **और** (सच्ची बात ये है कि आपने किसी से यह क़िस्सा सुना भी नहीं बस यह साफ़ दलील है पैग़म्बरी की फिर भी) **बहुत से लोग ईमान नहीं लाते चाहे आप का कैसा ही जी चाहता हो** (यानी उन का ईमान न लाना न आप के बस में हैं और न आप के ज़िम्मे है इसलिए आप को इस का कोई दुख न होना चाहिए)(103) **और** (उन के ईमान न लाने से आप का तो कोई नुक़सान नहीं क्योंकि) **आप उन से इस** (क़ुरआन) **पर कुछ बदला तो चाहते नहीं** (जिससे यह खटका हो कि न मानेंगे तो आप का बदला न मिलेगा), **यह** (क़ुरआन) **तो सिर्फ़ सारे जहान वालों के लिए एक नसीहत है**

(जो न मानेगा उसी का नुक़सान होगा)(104) **और** (एक अल्लाह के वजूद की) **बहुत सी निशानियां हैं आसमानों में और ज़मीन में जिन को देखते** (हुए गुज़रते) **हैं और वो उन की तरफ़** (ज़रा) **ध्यान नहीं देते** (यानी उन से दलील नहीं पकड़ते)(105) **और** (उन में से) **बहुत से लोग जो अल्लाह को मानते हैं तो इस तरह कि शिर्क भी करते जाते** (हैं और बिना तौहीद अल्लाह को मानना न मानने जैसा है बस ये लोग अल्लाह के साथ भी कुफ़्र करते हैं और पैग़म्बर के साथ भी कुफ़्र करते) **हैं**(106) **सो क्या** (अल्लाह व पैग़म्बर का इनकार करके) **फिर भी इस बात से बेफ़िक्र हुए बैठे हैं कि उन पर अल्लाह के अज़ाब की कोई ऐसी मुसीबत आजाए जो उन को घेर ले या उन पर अचानक आजाए और उन को** (पहले से) **ख़बर भी न हो** (यानी अल्लाह के अज़ाब से डरना चाहिए चाहे दुनिया में आजाए वर्ना आख़रत में तो आना ही है)(107) **आप कह दीजिए कि** (तुम मानो या न मानो) **मेरा तो ये ही तरीक़ा है कि लोगों को दलील** (और यक़ीन) **के साथ अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूं मैं भी और मुझ को मानने वाले भी, और अल्लाह** (शिर्क से) **पाक है और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूं**(108) **और** (ये जो पैग़म्बरी पर शक करते हैं कि पैग़म्बर फ़रिशता होना चाहिए तो) **हम ने आप से पहले बहुत सी बस्ती वालों में जितने** (पैग़म्बर) **भेजे सब इन्सान ही थे जिनके पास हम वही भेजते थे** (कोई भी फ़रिशता न था जिन्होंने उन को नहीं माना उन को सज़ाएं दी गईं इसी तरह इन को भी सज़ा होगी चाहे दुनिया में भी वर्ना आख़रत में), **तो क्या ये लोग मुल्क में** (कहीं) **चले फिरे नहीं कि** (अपनी आंखों से) **देख लेते कि उन लोगों का कैसा** (बुरा) **अन्जाम हुआ जो इन से पहले** (काफ़िर) **हो चुके हैं, और** (याद रक्खो जिस दुनिया की मुहब्बत में मदहोश होकर कुफ़्र अपना रक्खा है वो मिट जाने वाली है लेकिन) **आख़रत का घर उन लोगों के लिए कहीं बेहतर है जो** (शिर्क व गुनाहों से) **परहेज़ रखते** (हैं और ईमान लाते हैं और ताबेदारी करते) **हैं, तो क्या तुम इतना भी नहीं समझते** (कि मिटने वाली चीज़ अच्छी है या बाक़ी रहने वाली)(109)।

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि जो आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताबेदारी का दावा करे उस पर ज़रूरी है कि आप की दावत को लोगों में फैलाए और क़ुरआन की तालीम को आम करे।

حَتّٰۤى اِذَا اسۡتَيۡــَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوۡۤا اَنَّهُمۡ قَدۡ كُذِبُوۡا جَآءَهُمۡ نَصۡرُنَا ۙ فَنُجِّىَ مَنۡ نَّشَآءُ ؕ وَلَا يُرَدُّ بَاۡسُنَا عَنِ
الۡقَوۡمِ الۡمُجۡرِمِيۡنَ ﴿۱۱۰﴾ لَقَدۡ كَانَ فِىۡ قَصَصِهِمۡ عِبۡرَةٌ لِّاُولِى الۡاَلۡبَابِ ؕ مَا كَانَ حَدِيۡثًا يُّفۡتَرٰى وَلٰـكِنۡ تَصۡدِيۡقَ
الَّذِىۡ بَيۡنَ يَدَيۡهِ وَتَفۡصِيۡلَ كُلِّ شَىۡءٍ وَّهُدًى وَّرَحۡمَةً لِّقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱۱۱﴾

आयत न० 110 से 111

(अगर तुम को काफ़िरों पर अज़ाब में देरी से अ़ज़ाब न आने का शक हो तो जान लो कि पहली उम्मतों के काफ़िरों को भी बड़ी-बड़ी मुहलतें दी गईं) **यहां तक कि** (ढील का वक़्त लम्बा होने की वजह से) **पैग़म्बर** (इस बात से) **ना उम्मीद हो गये और वो** (पैग़म्बर) **सोचने लगे कि** (अल्लाह के अज़ाब का वक़्त तय करने में) **हमारे अन्दाज़े ने ग़लती की** (तो ऐसी ना उम्मीदी की हालत में) **उन को हमारी मदद पहुंची** (यनी काफ़िरों पर अज़ाब आया) **फिर** (उस अ़ज़ाब से) **हमने जिस को चाहा वो बचा लिया गया** (यानी मोमिन)**, और** (उस अ़ज़ाब में काफ़िर हलाक किये गये क्योंकि) **हमारा अज़ाब मुजरिम लोगों से नहीं हटता** (इसलिए मक्के के काफ़िरों को चाहिए कि अज़ाब में देर होने से धोके में न रहें)(110) **इन** (पहले पैग़म्बरों और उम्मतों) **के क़िस्से में समझदार लोगों के लिए** (बड़ा) **सबक़ है** (जो इससे सबक़ लें कि ताबेदारी का यह अन्जाम है और गुनाह का यह अन्जाम है)**, यह क़ुरआन** (जिसमें ये क़िस्से हैं) **कोई बनाई हुई बात तो है नहीं बल्कि इससे पहले जो आसमानी किताबें** (नाज़िल) **हो चुकी हैं यह उन की तस्दीक़ करने वाला है और हर** (ज़रूरी) **बात को साफ़-साफ़ बयान करने वाला है और ईमान वालों के लिए हिदायत का सामान व रहमत** (है बस ऐसी किताब से तो सबक़ लेना ज़रूरी) **है**(111)।

नोटः- इस पूरी सूरत में इस क़िस्से में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसललम को तसल्ली दी गई है कि आप को जो कुछ तकलीफ़ें अपनी क़ौम के हाथों पहुंच रही हैं पहले पैग़म्बरों को भी पहुंचती रही हैं मगर अन्जाम कार अल्लाह तआ़ला ने अपने पैग़म्बरों को कामयाब किया आप के साथ भी ऐसा ही होने वाला है।

13-सूरत-रा़द

इस मक्की सूरत में ‘6’ रूकू और ‘43’ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

الٓمّٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ؕ وَالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝١ اَللّٰهُ الَّذِيْ
رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ
مُّسَمًّى ؕ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ۝٢ وَهُوَ الَّذِيْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا
رَوَاسِيَ وَاَنْهٰرًا ؕ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝٣ وَفِي الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى
بِمَآءٍ وَّاحِدٍ ۟ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰى بَعْضٍ فِي الْاُكُلِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝٤

आयत न० 01 से 04

अलिफ़ लाम मीम रा (इस का मतलब तो अल्लाह ही को पता है) **ये** (अल्लाह की) **किताब** (यानी कुरआन) **की आयतें हैं, और जो कुछ आप पर आप के रब की तरफ़ से उतारा जाता है यह बिल्कुल सच है और** (चाहिए तो यह था कि सब ईमान लाते) **लेकिन बहुत से आदमी ईमान नहीं लाते(01) अल्लाह ऐसा** (कुदरत वाला) **है कि उस ने आसमानों** (के इतना बड़ा होने के बावजूद उन) **को बिना खम्बों के ऊंचा खड़ा कर दिया जैसा तुम उन** (आमसानों) **को** (इसी तरह) **देख रहे हो फिर अर्श पर** (जो कि शाही कुर्सी जैसा है, इस तरह) **क़ाइम हुआ** (जो कि उस की शान के लाइक़ है) **और सूरज व चान्द को काम में लगा दिया,** (उन दोनों में से) **हर एक** (अपने घेरे पर) **एक तय वक़्त में चलता रहता है** (जैसा कि सूरज अपने घेरे को साल भर में पूरा करता है और चान्द महीने भर में), **वो ही** (अल्लाह) **हर काम का** (जो कुछ दुनिया में होना है) **इन्तिज़ाम करता है** (और वो ही) **निशानियों को साफ़-साफ़ बयान करता है ताकि तुम अपने रब के पास जाने का** (यानी क़ियामत का) **यक़ीन कर लो** (कि जब वो ऐसी बड़ी चीज़ों को पैदा

करता है तो मुर्दों को ज़िन्दा क्यों नहीं कर सकता)(02) **और वो ऐसा है कि उसने ज़मीन को फैला दिया और इस** (ज़मीन) **में पहाड़ और नहरें पैदा कीं, और इसमें हर क़िस्म के फलों से दो-दो पैदा किये** (जैसे खट्टे और मीठे या छोटे और बड़े कोई किसी रंग का और कोई किसी रंग का और) **रात** (के अन्धेरे) **से दिन** (की रौशनी) **को छुपा देता है, इन बातों में सोचने वालों के** (समझने के) **वास्ते** (तौहीद पर) **दलीलें** (मौजूद) **हैं(03) और** (इसी तरह दूसरी निशानियां भी हैं जैसे) **ज़मीन में पास-पास** (और फिर) **अलग-अलग खेत हैं** (जो मिले जुले होने के बावजूद अलग-अलग असर रखते हैं) **और अंगूरों के बाग़ हैं और** (अलग-अलग) **खेतियां हैं और खजूर** (के पेड़) **हैं जिन में कुछ तो ऐसे हैं कि एक तना ऊपर जाकर दो तने हो जाते हैं और कुछ में दो तने नहीं होते** (बल्कि जड़ से शाख़ों तक एक ही तना चला जाता है और) **सब को एक ही तरह का पानी दिया जाता है और** (इसके बावजूद फिर भी) **हम एक** (फल) **को दूसरे फलों** (से ज़ाइक़े) **में बढ़ा देते हैं, इन बातों में** (भी) **समझदारों के** (समझने के) **वास्ते** (तौहीद यानी अल्लाह के एक होने की) **निशानियां** (मौजूद) **हैं(04)।**

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि जो लोग तौहीद की इन निशानियों में ग़ौर और सोच विचार नहीं करते तो अक़ल वाले नहीं चाहे दुनिया में उन को कैसा ही अक़्लमन्द समझा और कहा जाता हो।

وَ اِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۬ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ
الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٥ وَ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ
الْحَسَنَةِ وَ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ؕ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ
الْعِقَابِ ۝٦ وَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ لَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّ لِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝٧ اَللّٰهُ
يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَ مَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَ مَا تَزْدَادُ ؕ وَ كُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝٨

आयत न० 05 से 08

और (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **अगर आप को** (इन लोगों के क़ियामत के इनकार करने से) **अचम्भा हो तो** (सचमुच) **उन का यह कहना अचम्भे की बात है कि जब हम** (मर कर) **मिट्टी हो गये तो क्या** (मिट्टी होकर) **हम फिर** (क़ियामत को) **नये सिरे से पैदा होंगे**

(अचम्भा इसलिए कि ऐसी कुदरत वाले को दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल है), **ये वो लोग हैं कि उन्होंने अपने रब के साथ कुफ़्र किया** (कि क़ियामत का इनकार कुफ़्र है) **और ऐसे लोगों की गर्दनों में** (दोज़ख़ में) **पट्टे पड़े होंगे और ऐसे लोग दोज़ख़ी हैं,** (और) **वो उसमें सदा रहेंगे(05) और ये लोग भलाई** (चैन के दिन पूरे होने) **से पहले आप से बुराई** (और मुसीबत मांग कर उस) **की जल्दी मचा रहे हैं** (कि अगर आप पैग़म्बर हैं तो जाइये अज़ाब मंगा दीजिए यानी समझते हैं कि अज़ाब नहीं आसकता) **जब कि इन से पहले** (दूसरे काफ़िरों पर) **बहुत से अज़ाब आ चुके हैं** (तो इन पर आजाना क्या मुश्किल है), **और बेशक आप का रब लोगों की ग़लतियां उन की ज़्यादतियों के बावजूद मुआफ़ कर देता है, और यह भी सच है कि आप का रब सख़्त सज़ा देता** (है यानी तौबा करने वालों के लिए रहमत और गुनाहगारों के लिए सज़ा) **है(06) और ये काफ़िर** (पैग़म्बरी का इनकार करने की नीयत से) **यह भी कहते हैं कि इन** (पैग़म्बर) **पर ख़ास मोजिज़ा** (जो हम चाहते हैं) **इनके रब की तरफ़ से क्यों नहीं उतारा गया,** (यह तो आप के बस की बात नहीं क्योंकि) **आप सिर्फ़** (अल्लाह के अज़ाब से काफ़िरों को) **डराने वाले** (यानी पैग़म्बर) **हैं** (और आप कोई अनोखे पैग़म्बर नहीं हुए बल्कि) **हर क़ौम के लिए** (पहली उम्मतों में भी) **हिदायत का रास्ता दिखाने वाले होते चले आए हैं** (मांगे हुए मोजिज़े दिखाना उन की ज़िम्मेदारी भी नहीं रही)**(07) अल्लाह तआ़ला को सब पता रहता है जो कुछ किसी औरत के पेट में है** (लड़का है या लड़की ख़ूबसूरत है या बदसूरत नेक है या बद) **और जो कुछ बच्चेदानी में घटत बढ़त होती है** (कि कभी एक बच्चा पैदा होता है कभी ज़्यादा और कभी जल्दी पैदा होता है कभी देर में), **और हर चीज़ अल्लाह के यहां एक ख़ास अन्दाज़ से** (है न इससे कम हो सकती है न ज़्यादा हो सकती) **है(08)।**

नोटः- अल्लाह तआ़ला जब चाहते हैं पैग़म्बर के हाथों मोजिज़ा ज़ाहिर कर देते हैं जो पैग़म्बरी का सबूत होता है लेकिन मांगे हुए मोजिज़े दिखा देना पैग़म्बर की ज़िम्मेदारी नहीं है।

عٰلِمُ الْغَیْبِ وَ الشَّهَادَةِ الْكَبِیْرُ الْمُتَعَالِ ۝٩ سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَ مَنْ جَهَرَ بِهٖ وَ مَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۭ
بِالَّیْلِ وَ سَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ۝١٠ لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَیْنِ یَدَیْهِ وَ مِنْ خَلْفِهٖ یَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا
یُغَیِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى یُغَیِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ وَ اِذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ
مِنْ وَّالٍ ۝١١ هُوَ الَّذِیْ یُرِیْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّ طَمَعًا وَّ یُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۝١٢ۚ وَ یُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَ

الْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ وَ يُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَ هُمْ يُجَادِلُوْنَ فِي اللّٰهِ ۚ وَ هُوَ شَدِيْدُ
الْمِحَالِ ﴿۱۳﴾ لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ وَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى
الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَ مَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَ مَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿۱۴﴾ وَ لِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ
طَوْعًا وَّ كَرْهًا وَّ ظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَ الْاٰصَالِ ﴿۱۵﴾

आयत न० 09 से 15

वो सभी छुपी और खुली चीज़ों का जानने वाला है सब से बड़ा (और) **ऊंची शान वाला है**(09) **तुम में से कोई चुपके से बात कहे या पुकार कर कहे और कोई रात में कहीं छुप जाए या दिन में चले फिरे यह सब** (अल्लाह तआ़ला के इल्म में) **बराबर** (है यानी सब को बराबर जानता) **है**(10) (और हर एक की हिफ़ाज़त भी करता है बस तुम में से) **हर आदमी** (की हिफ़ाज़त) **के लिए कुछ फ़रिशते** (तयनात) **हैं जिन की बदली होती रहती है कुछ** (फ़रिशते) **उसके आगे और कुछ उसके पीछे कि वो अल्लाह के हुक्म से** (बहुत सी बलाओं और मुसीबतों से) **उसकी हिफ़ाज़त करते हैं,** (और इससे कोई यह न समझे कि जब फ़रिशते हमारी हिफ़ाज़त करते हैं तो जो चाहो करो गुनाह या कुफ्र किसी तरह अज़ाब ही न आएगा सो ऐसा समझना बिल्कुल ग़लत है क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला** (शुरू में तो किसी को अज़ाब नहीं देते जैसा कि उन की आदत है कि) **किसी क़ौम की** (अच्छी) **हालत को नहीं बदलते जब तक वो लोग खुद ही अपने** (कारनामों) **को नहीं बदल लेते** (बस जब वो बुराई में पड़ जाते हैं तो उन पर मुसीबतें भेजी जाती हैं)**, और जब अल्लाह तआ़ला किसी क़ौम पर मुसीबत डालने का इरादा कर लेते** (हैं यानी अ़ज़ाब देना चाहते) **हैं तो फिर उस के हटने की कोई सूरत ही नहीं** (यानी कोई आकर उसे हटा नहीं सकता) **और** (ऐसे वक़्त में) **कोई अल्लाह के सिवा उन का मददगार नहीं रहता** (यहां तक कि फ़रिशते भी उन की हिफ़ाज़त नहीं करते फिर जिन पर उन को भरोसा है वो तो क्या हिफ़ाज़त करते)(11) **वो ऐसा** (बड़ी शान वाला) **है कि तुम को** (बारिश के वक़्त) **बिजली** (चमकती हुई) **दिखाता है जिससे** (उसके गिरने का) **डर भी होता है और** (उस से बारिश की) **उम्मीद भी होती है और वो बादलों को** (भी) **ऊंचा उठाता है जो पानी से भरे होते हैं**(12) **और राद** (फरिशता) **उस की तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बयान करता है और दूसरे फ़रिशते भी उसके डर से** (उसकी तस्बीह करते हैं) **और वो** (ज़मीन की तरफ़) **बिजलियां भेजता है फिर जिस पर चाहे गिरा**(कर जला)**देता है**

और वो लोग अल्लाह के बारे में (यानी उसकी तौहीद के बारे में उसका ऐसी शान वाला होने के बावजूद) **बहस करते हैं जब कि उस की ताक़त बड़ी ज़बरदस्त है** (तो उससे डरना चाहिए मगर ये लोग डरते नहीं और उसके साथ साझी बनाते हैं)(13) **उसी से दुआ मांगना सच्चा** (क्योंकि वो ही दुआ कुबूल करता), **है और अल्लाह के सिवा जिन को ये लोग** (अपनी ज़रूरत व मुसीबत में) **पुकारते हैं वो** (बेबस होने की वजह से) **उन की दुआ को पूरा नहीं कर सकते जैसा कोई आदमी पानी की तरफ़ अपने दोनो हाथ फैलाकर यह चाहे कि** (पानी उड़ कर) **उसके मुंह तक आजाए और वो** (ख़ुद) **उसके मुंह तक** (किसी तरह) **आने वाला नहीं** (बस जिस तरह पानी उन की दुआ कुबूल करने से लाचार है उसी तरह उन के माबूद लाचार हैं, इसलिए) **काफ़िरों** (का उन से) **दुआ करना बेअसर है(14) और अल्लाह ही** (ऐसा ज़बरदस्त है कि उसी) **के सामने सब सर झुकाए हुए हैं जितने आसमानों में हैं और जितने ज़मीन में हैं** (कुछ) **ख़ुशी से और** (कुछ) **मजबूरी से** (ख़ुशी से यह कि अपनी मर्ज़ी से इबादत करते हैं मजबूरी यह कि उसके हुक्म के सामने सब को गर्दन झुकानी पड़ती हैं) **और उन** (ज़मीन वालों) **के साय भी** (सर झुकाते हैं) **सुबह और शाम के वक़्तों में** (यानी साये और परछाई को वो जितना चाहे बढ़ाएं और जितना चाहे घटाएं)(15)।

नोटः- एक हदीस में आता है कि ‘‘फ़रिशतों की दो जमाअतें इन्सान पर तैनात रहती हैं जिन की डयूटी सुबह शाम बदलती रहती है जो हिफ़ाज़त के साथ-साथ उस को गुनाहों से बचाने की कोशिश भी करते हैं। (अबूदाऊद)

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّ لَا
ضَرًّا ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَ الْبَصِيْرُ ۙ۬ اَمْ هَلْ تَسْتَوِى الظُّلُمٰتُ وَ النُّوْرُ ۚ۬ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا
كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ وَّ هُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝١٦ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ
اَوْدِيَةٌ ۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ؕ وَ مِمَّا يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِى النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ
مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَ الْبَاطِلَ ؕ۬ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَ اَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِى
الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ۝١٧ؕ

आयत न० 16 से 17

आप (इन से यह) **कहिए कि आसमानों और ज़मीन का रब** (यानी पैदा करने वाला व हिफ़ाज़त करने वाला) **कौन है,** (जानते तो सब हैं फिर) **आप** (ही) **कह दीजिए कि अल्लाह है,** (फिर) **आप यह कहिए कि क्या** (तौहीद की ये दलीलें सुनकर) **फिर भी तुम ने अल्लाह के सिवा दूसरे मददगार** (यानी माबूद) **बना लिए हैं जो** (लाचार होने की वजह से) **अपने आप को भी नफ़ा नुक़सान नहीं पहुंचा सकते,** (और फिर शिर्क के ग़लत और तौहीद के सही होने को समझाने के लिए) **आप यह** (भी) **कहिए कि क्या अन्धा और देखने वाला बराबर हो सकता है** (यह मिसाल है मुशरिक और ईमान वाले की) **या कहीं अन्धेरा और रौशनी बराबर हो सकती है** (यह मिसाल है शिर्क और तौहीद की)**, या उन्होंने अल्लाह के ऐसे साझी मान रक्खे हैं कि उन्होंने भी** (किसी चीज़ को) **पैदा किया हो जैसे अल्लाह पैदा करता है** (जिसको वो भी मानते हैं) **फिर** (इस वजह से) **उन को** (दोनो का) **पैदा करना एक जैसा लगता हो,** (और इससे धोका हुआ हो कि जब दोनों पैदा करने में बराबर हैं तो दोनो एक से माबूद भी होंगे इसके बारे में भी) **आप** (ही) **कह दीजिए कि अल्लाह ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वो ही** (अपनी हस्ती व ख़ूबियों में) **अकेला है** (और सब पर) **छाया हुआ है**(16) **अल्लाह तआ़ला ने आसमान से पानी बरसाया फिर** (उस पानी से नदी) **नाले** (भर कर) **अपने हिसाब से बहने लगे** (यानी छोटे नाले में थोड़ा पानी बड़े नाले में ज़्यादा पानी) **फिर वो बहाव** (का पानी) **घास फूस को बहाया लाया जो उस** (पानी की परत) **के ऊपर** (आ रहा है एक कूड़ा करकट तो यह) **है, और जिन चीज़ों को आग के अन्दर** (रख कर) **ज़ेवर या और सामान** (जैसे बर्तन) **बनाने के लिए तपाते हैं उस में भी ऐसा ही मैल कुचैल** (ऊपर आजाता है बस इन दो मिसालों में दो चीज़ों में एक काम की चीज़ कि असल पानी और असल माल है और एक बेकार चीज़ कि कूड़ा करकट मैल कुचैल) **है,** (तो) **अल्लाह तआ़ला हक़** (यानी तौहीद व ईमान) **और झूट** (यानी कुफ़्र व शिर्क) **की इसी तरह की मिसाल बयान कर रहा है, सो** (इन दोनों मिसालों में) **जो मैल कुचैल था वो तो फेंक दिया जाता है और जो चीज़ लोगों के काम की है वो दुनिया में** (नफ़ा पहुंचाने के लिए) **रहती है,** (और जिस तरह सच झूट की मिसाल बयान की गई) **अल्लाह तआ़ला इसी तरह** (हर ज़रूरी बात में) **मिसालें बयान किया करते हैं**(17)।

नोटः- ऊपर मिसाल से मालूम हुआ कि झूट ज़्यादा दिन बाक़ी नहीं रहता आख़िरकार मिट जाता है और हक़ बाक़ी व कामयाब रहता है।

لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ؕ وَ الَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّ مِثْلَهٗ
مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ وَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَ بِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۸﴾ اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَآ
اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۱۹﴾ الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَ لَا
يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ﴿۲۰﴾ وَ الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَ يَخَافُوْنَ سُوْٓءَ
الْحِسَابِ ﴿۲۱﴾ وَ الَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّ عَلَانِيَةً وَّ
يَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿۲۲﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَ مَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ
وَ اَزْوَاجِهِمْ وَ ذُرِّيّٰتِهِمْ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿۲۳﴾ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ
عُقْبَى الدَّارِ ﴿۲۴﴾

आयत न० 18 से 24

जिन लोगों ने अपने रब का कहना मान लिया (और ईमान लाए और ताबेदारी की) **उन के वास्ते अच्छा बदला** (यानी जन्नत) **है, और जिन लोगों ने उसका कहना नहीं माना** (और कुफ़्र व गुनाह पर जमे रहे) **उन के पास** (क़ियामत के दिन) **अगर सारी दुनिया भर की चीज़ें** (मौजूद) **हों और** (बल्कि) **उस के साथ उसके बराबर और भी** (माल व दौलत) **हो तो सब अपनी जान बचाने के लिए देने को तैयार हो जाएंगे, उन लोगों का सख़्त हिसाब होगा और उन का ठिकाना** (सदा के लिए) **जहन्नम है, और वो बहुत बुरा ठिकाना है(18) जो आदमी यह यक़ीन रखता हो कि जो कुछ आप** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **के रब की तरफ़ से आप पर उतरा है वो सब हक़ है क्या ऐसा आदमी उस की तरह हो सकता है जो कि** (इस जानकारी से) **अन्धा है** (यानी काफ़िर व मोमिन बराबर नहीं), **बस नसीहत तो समझदार ही लोग मानते हैं(19)** (और) **ये** (समझदार) **लोग ऐसे हैं कि अल्लाह** (और उसके बन्दों) **से जो कुछ उन्होंने एहद लिया है उस को पूरा करते हैं और** (इस) **एहद को तोड़ते नहीं(20) और ये ऐसे हैं कि अल्लाह ने जिन रिशतों को जोड़े रखने का हुक्म किया है उन को जोड़े रखते हैं और अपने रब से डरते हैं और सख़्त अज़ाब से डरते** (हैं जो काफ़िरों को होगा इसलिए कुफ़्र से बचते) **हैं(21) और ये लोग ऐसे हैं कि अपने रब को राज़ी करने के लिए कोशिश करते हुए** (दीने हक़ पर) **मज़बूत रहते हैं और नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं और जो कुछ हमने उन को रोज़ी**

दी है उसमें से चुपके भी और ऐलानिया भी (जैसा मौक़ा होता है) **ख़र्च करते हैं और** (लोगों की) **बदसलूकी को** (जो उनके साथ की जाए) **अच्छे सलूक से टाल देते हैं** (यानी कोई उनके साथ बुरा सलूक करे तो कुछ ध्यान नहीं करते बल्कि उसके साथ अच्छा सलूक करते हैं) **उस जहान में** (यानी आख़रत में) **नेक अन्जाम उन लोगों के वास्ते है(22) यानी सदा रहने की जन्नत में वो लोग भी दाख़िल होंगे और उनके मां बाप और बीवियों और औलाद में जो** (जन्नत के) **हक़दार** (यानी मोमिन) **होंगे** (चाहे इनके दर्जे के न हों) **वो भी** (जन्नत में उन की बरकत से उन्हीं के दर्जे में) **दाख़िल होंगे और फ़रिशते उन के पास हर** (तरफ़ के) **दरवाज़े से आते होंगे(23)** (और यह कहते होंगे कि) **तुम** (हर मुसीबत और ख़तरे से) **सही सलामत रहोगे इस वजह से कि तुम** (सच्चे दीन पर) **मज़बूत रहे थे सो इस जहान में तुम्हारा अन्जाम बहुत अच्छा है(24)।**

नोटः- हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुआज़ को वसीयत की कि "बुराई के बाद (तौबा करके) नेकी कर लो तो वो बुराई को मिटा देगी"।

(मुआरिफुल क़ुरआन)

وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ ۙ
اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۭ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ
وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ
يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ﴿٢٧﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَىِٕنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ۭ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ
تَطْمَىِٕنُّ الْقُلُوْبُ ﴿٢٨﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ﴿٢٩﴾ كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِيْٓ اُمَّةٍ
قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَا۟ عَلَيْهِمُ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ۭ قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ مَتَابِ ﴿٣٠﴾

आयत न० 25 से 30

और जो लोग अल्लाह तआला से किये हुए वादों को पक्का करने के बाद तोड़ते हैं और अल्लाह तआला ने जिन रिशतों को जोड़े रखने का हुक्म दिया है उन को तोड़ते हैं (यानी उनके हक़ अदा नहीं करते) **और दुनिया में फ़साद करते हैं ऐसे लोगों पर लानत होगी**

और उन का (आख़रत में) **बुरा ठिकाना है**(25) (और दुनिया में उन को ख़ुशहाल देख कर धोका न खाएं क्योंकि) **अल्लाह जिस को चाहे ज़्यादा रोज़ी देता है और** (जिसके लिए चाहता है) **कमी कर देता** (है इसका यह मतलब नहीं कि जिस को ज़्यादा दिया उससे अल्लाह ख़ुश और जिसको कम दिया उससे नाराज़) **है, और ये** (काफ़िर) **लोग दुनिया की ज़िन्दगी** (और उस की मौज मस्ती) **पर इतराते हैं, और** (और उन का इतराना बेकार और ग़लती है क्योंकि) **यह दुनिया की ज़िन्दगी** (और इसकी मौज मस्ती) **आख़रत के मुक़ाबिले सिवाए थोड़ी सी ज़िन्दगी के और कुछ भी नहीं**(26) **और ये काफ़िर लोग** (आप की पैग़म्बरी पर ऐतराज़ करने के लिए ऐसा) **कहते हैं कि इन** (पैग़म्बर) **पर कोई निशानी** (हमारी मांगी हुई) **उन के रब की तरफ़ से क्यों नहीं उतारी गई, आप कह दीजिए कि बेशक** (तुम्हारी इन बेहूदा मांगों से साफ़ पता चलता है कि) **अल्लाह तआ़ला जिसको चाहते हैं गुमराह कर देते हैं** (कि क़ुरआन जैसे मोजिज़े के देखने के बाद फिर हटधर्मी की बात करते हो) **और जो आदमी उन की तरफ़ लौ लगाता है उस को अपनी तरफ़** (पहुंचने का) **रास्ता दिखा देते** (हैं और गुमराही से बचा लेते) **हैं**(27) **ये वो लोग हैं जो ईमान लाए और अल्लाह के ज़िक्र से उन के दिलों को चैन मिलता है, याद रक्खो कि अल्लाह के ज़िक्र** (में ही ऐसा असर है कि इस) **से दिलों को चैन मिलता** (है यानी जिस मरतबे का ज़िक्र हो उसी मरतबे का चैन मिलता) **है**(28) **जो लोग ईमान लाए और नेक काम किये उन के लिए** (दुनिया में) **ख़ुशहाली और** (आख़रत में) **अच्छा अन्जाम है**(29) (जिस तरह और पैग़म्बर भेजे गये) **इसी तरह हम ने आप को एक ऐसी उम्मत में पैग़म्बर बनाकर भेजा है कि इस** (उम्मत) **से पहले और बहुत सी उम्मतें हो चुकी हैं** (और आप को इन की तरफ़ इसलिए पैग़म्बर बनाकर भेजा) **ताकि इनको वो किताब पढ़ कर सुना दें जो हमने आप के पास वही के वास्ते से भेजी है और** (उन को चाहिए था कि इस बड़ी नेमत की क़द्र करते और इस किताब पर कि वो मोजिज़ा भी है ईमान ले आते मगर) **वो लोग ऐसे बड़े रहमत वाले की नाशुक्री करते हैं** (और क़ुरआन पर ईमान नहीं लाते), **आप कह दीजिए** (कि तुम्हारा ईमान न लाने से मेरा कोई नुक़सान नहीं क्योंकि) **वो मेरा रब** (और रखवाला) **है उसके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं मैंने उसी पर भरोसा कर लिया और उसी के पास मुझ को जाना** (है यानी मेरी हिफ़ाज़त करने वाला तो अल्लाह तआ़ला काफ़ी है तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते लेकिन मुख़ालफ़त करने में तुम्हारा ही नुक़सान) **है**(30)।

नोटः- एक हदीस में है कि जो आदमी ये चाहता है कि अल्लाह तआ़ला उस की रोज़ी बढ़ा दें और

कामों में बरकत दें तो उस को चाहिए कि रिशतेदारों के साथ अच्छा सलूक करे। (बुख़ारी व मुस्लिम)

وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ؕ بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا ؕ اَفَلَمْ
يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا
قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۳۱ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ
مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۳۲ اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍۭ بِمَا
كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ قُلْ سَمُّوْهُمْ ؕ اَمْ تُنَبِّئُوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ؕ بَلْ
زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۳۳

आयत न० 31 से 33

और (ऐ पैग़म्बर और ऐ मुसलमानो) **अगर कोई कुरआन ऐसा** (उतरा) **होता जिससे पहाड़** (अपनी जगह से) **हटा दिये जाते या उससे ज़मीन जल्दी-जल्दी तय हो जाती** (यानी सफ़र जल्दी पूरा हो जाता) **या उससे मुर्दों के साथ किसी को बातें करा दी जातीं** (यानी मुर्दा ज़िन्दा होकर बातें करता, ऐसे मोजिज़ों की मांग बहुत से काफ़िर किया करते थे, तब भी ये लोग ईमान न लाते क्योंकि ये सामान असली असर नहीं रखते)**, बल्कि सब कुछ अल्लाह ही के बस में** (है वो जिस को तौफ़ीक़ देते हैं वो ही ईमान लाता) **है, क्या** (यह सुन कर) **फिर भी ईमान वालों को इस बात से तसल्ली नहीं होती कि अल्लाह तआ़ला चाहता तो सारी** (दुनिया के) **लोगों को राह पर ले आता** (मगर इसमें कुछ भेद हैं इसलिए सब लोग ईमान न लाएंगे जिस की बड़ी वजह हटधर्मी है)**, और** (अगर ये सोचो कि फिर इन को सज़ा क्यों नहीं होती तो) **इन** (मक्के के) **काफ़िरों पर तो सदा** (आए दिन) **इनके** (बुरे) **कामों की वजह से कोई न कोई मुसीबत आती रहती है** (कहीं क़त्ल, कहीं क़ैद कहीं हार, कहीं रूसवाई) **या** (कभी) **इन की बस्ती के आस पास कहीं** (कोई मुसीबत) **आती रहती है** (ताकि उसी से सबक़ लें) **यहां तक कि** (इसी हालत में) **अल्लाह का वादा आजाएगा** (यानी आख़रत के अ़ज़ाब का सामना हो जाएगा जो कि मरने के बाद शुरू हो जाएगा)**, बेशक अल्लाह तआ़ला वादे के ख़िलाफ़ नहीं करते** (बस अज़ाब ज़रूर आना है चाहे कुछ देर से सही)(31) **और** (ऐ पैग़म्बर ये बात कुछ आप ही के साथ नहीं बल्कि) **बहुत से पैग़म्बरों की जो कि आप से पहले हो चुके हैं हंसी उड़ाई गई फिर मैं उन काफ़िरों को ढील देता रहा फिर** (कुछ

वक़्त के बाद) **मैंने उन की पकड़ की सो** (समझने की बात है कि) **मेरी सज़ा किस तरह की** (थी बहुत सख़्त) **थी(32) फिर** (भी) **क्या जो** (अल्लाह) **हर आदमी के कामों को जानता हो और उन लोगों के बनाए हुए माबूद बराबर हो सकते हैं और** (इसके बावजूद) **इन लोगों ने अल्लाह के लिए साझी बना रक्खे हैं, आप कहिए कि** (ज़रा) **इन** (माबूदों) **के नाम तो लो** (मैं भी सुनूं कौन हैं और कैसे हैं), **क्या तुम अल्लाह तआ़ला को ऐसी बात की ख़बर देते हो कि दुनिया** (भर) **में उस** (के वजूद) **की ख़बर अल्लाह तआ़ला को न हो** (और अल्लाह तआ़ला को पता न होने का मतलब यह है कि वो चीज़ है ही नहीं) **या वैसे ही ज़बान से नाम लेते हो** (और असलीयत कुछ भी नहीं, मगर फिर भी ये लोग न मानेंगे) **बल्कि इन काफ़िरों को ये चालाकी की बातें अच्छी लगती हैं और** (इसी वजह से) **उन** (की हिदायत) **के रास्ते में रूकावट पैदा हो गई, और** (असल बात वो ही है कि) **जिस को अल्लाह तआ़ला गुमराही में रक्खे उस को कोई राह पर लाने वाला नहीं** (लेकिन वो उसी को गुमराह रखता है जो सच्चाई जानने के बावजूद हटधर्मी करता है)(33)।

नोटः- दुनिया के किसी भी हिस्से में जो मुसीबतें तूफ़ान या ज़लज़ले की सूरत में आती हैं उससे सभी लोगों को सबक़ लेना चाहिए तौबा इस्तिग़फ़ार करना चाहिए।

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ لَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿۳۴﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ
وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّ ظِلُّهَا ؕ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖ ۗ وَّ عُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ
النَّارُ ﴿۳۵﴾ وَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَ مِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ؕ قُلْ اِنَّمَآ
اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَ لَآ اُشْرِكَ بِهٖ ؕ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَ اِلَيْهِ مَاٰبِ ﴿۳۶﴾ وَ كَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ؕ وَ لَئِنِ
اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَمَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّ لَا وَاقٍ ﴿۳۷﴾

आयत न० 34 से 37

इन काफ़िरों के लिए दुनिया की ज़िन्दगी में (भी) **अ़ज़ाब है** (वो क़त्ल या क़ैद या बीमारी या मुसीबतें हैं) **और आख़रत का अज़ाब कहीं ज़्यादा भारी होगा** (क्योंकि सख़्त भी है और सदा का भी), **और अल्लाह** (के अज़ाब) **से उन को कोई बचाने वाला नहीं होगा(34)** (और) **जिस जन्नत का परहेज़गारों** (यानी कुफ़्र व शिर्क से बचने वालों) **से वादा किया गया है, वो ऐसी है कि**

उस (के महलों और पेड़ों) **के नीचे से नहरें बहती होंगी, और उस का फल और उस का साया सदा-सदा रहेगा, यह** (तो) **अन्जाम होगा परहेज़गारों का और काफ़िरों का अन्जाम दोज़ख़ होगा(35) और जिन को हमने** (आसमानी) **किताब** (तौरेत व इन्जील) **दी है** (और वो उसको पूरी तरह मानते थे) **वो इस** (किताब) **से ख़ुश हुए हैं जो आप पर उतारी गई है** (क्योंकि उस की ख़बर अपनी किताबों में पाते हैं और ख़ुश होकर मान लेते और ईमान लाते हैं) **और उन्हीं के गिरोह में कुछ ऐसे हैं कि इस** (किताब) **के कुछ हिस्से का** (जिसमें उन की किताब के ख़िलाफ़ हुक्म है) **इनकार करते** (हैं और कुफ़्र करते) **हैं, आप** (उनसे) **कह दीजिए कि मुझ को** (तौहीद के बारे में) **सिर्फ यह हुक्म हुआ है कि मैं अल्लाह की इबादत करूं और किसी को उस का साझी न मानूं,** (और पैग़म्बरी के बारे में यह बात है कि) **मैं** (लोगों को) **अल्लाह ही की तरफ़ बुलाता हूं** (जिसमें मेरा अपना कोई लालच नहीं) **और उसी की तरफ़ मुझ को** (दुनिया से लौट कर) **जाना है(36) और** (अल्लाह तआ़ला कहते हैं कि हमने जिस तरह और पैग़म्बरों को ख़ास-ख़ास ज़बानों में ख़ास-ख़ास हुक्म दिये) **इसी तरह हमने इस** (कुरआन) **को अरबी ज़बान में एक हुक्म नामा बनाकर उतारा है, और** (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **अगर आप** (मान लो) **उन की मर्ज़ी** (यानी बदले हुए हुक्मों) **पर चलें इसके बाद कि आप के पास** (शरीअ़त के हुक्मों का सही) **इल्म पहुंच चुका है तो अल्लाह तआ़ला के मुक़ाबिले में न कोई आप का मददगार होगा और न कोई बचाने वाला** (और जब पैग़म्बर को ऐसा कहा जा रहा है तो और लोग इनकार करके कहां रहेंगे)(37)।

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَ جَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّ ذُرِّيَّةً ؕ وَ مَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ
اللّٰهِ ؕ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ﴿۳۸﴾ يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَ يُثْبِتُ ۖۚ وَ عِنْدَهٗۤ اُمُّ الْكِتٰبِ ﴿۳۹﴾ وَ اِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ
الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَ عَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴿۴۰﴾ اَوَ لَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ
اَطْرَافِهَا ؕ وَ اللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ؕ وَ هُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۴۱﴾ وَ قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ
الْمَكْرُ جَمِيْعًا ؕ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ؕ وَ سَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿۴۲﴾ وَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
لَسْتَ مُرْسَلًا ؕ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ وَ بَيْنَكُمْ ۙ وَ مَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ﴿۴۳﴾

आयत न० 38 से 43

और (किताब वालों में से कुछ लोग जो पैग़म्बरी पर यह ऐतराज़ करते हैं कि इनके बहुत सी बीवियां हैं सो उसका जवाब यह है कि) **हमने बेशक आप से पहले बहुत से पैग़म्बर भेजे और हमने उन को बीवियां और बच्चे भी दिये** (यह बात पैग़म्बरी में कौन सी रूकावट है), **और** (कुछ लोग किताब के हुक्मों को बदलने की मांग करते थे तो उस का जवाब यह है कि) **किसी पैग़म्बर के बस में यह बात नहीं कि एक आयत** (यानी एक हुक्म) **अल्लाह के हुक्म के बिना** (अपनी तरफ़ से) **ला सके** (बल्कि सभी हुक्म अल्लाह की तरफ़ से तय हैं, और) **हर ज़माने के लिए** (उसकी ज़रूरत के हिसाब से) **ख़ास-ख़ास हुक्म होते** (हैं फिर दूसरे ज़माने में कुछ बदल जाते) **हैं**(38) (बस) **अल्लाह तआ़ला** (ही) **जिस हुक्म को चाहें** (ज़माने के हिसाब से) **बदल देते हैं और जिस हुक्म को चाहें बाक़ी रखते हैं और असल किताब** (यानी तक़दीर की किताब) **उन्हीं के पास** (रहती) **है**(39) **और** (ये लोग कहते हैं कि अगर आप पैग़म्बर हैं तो इनकार पर क्यों अज़ाब नहीं आजाता इसके बारे में सुन लीजिए कि) **जिस बात का** (यानी अज़ाब के आने का) **हम उन से** (पैग़म्बरी के इनकार पर) **वादा कर रहे हैं उसमें कुछ हिस्सा अगर हम आप को दिखादें** (यानी आप की ज़िन्दगी में कोई अज़ाब उन पर आजाए) **चाहे** (इस अज़ाब से पहले) **हम आप को** (दुनिया से) **उठालें** (फिर बाद में वो अज़ाब हो चाहे दुनिया में या आख़रत में दोनो सूरतों में आप फ़िक्र न करें) **बस आप के ज़िम्मे तो सिर्फ़** (हुक्मों का) **पहुंचा देना है और हिसाब लेना तो हमारा काम है** (आप इस फ़िक्र में क्यों पड़ें कि अगर अज़ाब आजाए तो अच्छा है शायद ईमान ले आएं)(40) **क्या** (ये लोग) **इस चीज़ को नहीं देख रहे हैं कि हम** (इस्लाम की जीत से उनकी) **ज़मीन को चारों तरफ़ से घटाते चले आ रहे हैं** (यानी मुसलमानों की जीत की वजह से उन की हुकूमत दिनो दिन घटती जा रही है सो यह भी तो एक तरह का अज़ाब है), **और अल्लाह जो चाहता है हुक्म करता है उसके हुक्म को कोई हटाने वाला नहीं** (बस उसके अज़ाब को उनके हिमायतियों या माबूदों में से कोई रोक नहीं सकता), **और** (अगर इनको कुछ मोहलत भी हो गई तो क्या है) **वो बड़ी जल्दी हिसाब लेने वाला है** (वक़्त की देर है फिर फ़ौरन ही सज़ा शुरू हो जाएगी)(41) **और** (ये लोग जो पैग़म्बर को सताने या इस्लाम में कमी निकालने के लिए तरह-तरह की चाले चलते हैं तो इन से कुछ नहीं होता जैसे) **इन से पहले जो** (काफ़िर) **लोग हो चुके हैं उन्होंने** (भी इस काम के लिए बड़ी-बड़ी) **चालें चलीं सो** (कुछ भी न हुआ क्योंकि) **असल चाल तो अल्लाह ही की चलती है** (उस के सामने किसी की नहीं चलती सो अल्लाह ने उन की वो चालें न चलने दी), **उस को सब**

ख़बर रहती है जो कुछ आदमी करता (है फिर उस को वक़्त पर सज़ा देता) **है, और इन** (काफ़िरों के कामों की भी सब उस को ख़बर है सो इन) **को अभी पता चल जाएगा कि उस दुनिया में नेक अन्जामी किसके हिस्से में है** (उन के या मुसलमानों के)**(42) और ये काफ़िर लोग** (इन सज़ाओं को भूले हुए) **यह कह रहे हैं कि** (अल्लाह की पनाह) **आप पैग़म्बर नहीं, आप कह दीजिए कि** (तुम्हारे इनकार से क्या होता है) **मेरे तुम्हारे बीच में** (मेरी पैग़म्बरी पर) **गवाही के लिए अल्लाह तआ़ला काफ़ी है और वो आदमी** (काफ़ी है) **जिसके पास** (आसमानी) **किताब का इल्म** (है यानी किताब वालों के आलिम क्योंकि उन किताबों में मेरी पैग़म्बरी की तस्दीक़) **है(43)**।

नोटः- अल्लाह की गवाही का मतलब यह है कि उसने पैग़म्बरी के सबूत के लिए मोजिज़े दिये हैं और किताब वालों के आलिमों में जो इन्साफ़ वाले हैं वो आसमानी किताबों के हवाले से तसदीक़ कर सकते हैं।

14-सूरत-इब्राहीम

इस मक्की सूरत में ‘7’ रूकू और ‘52’ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۙ﴿۱﴾
اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ۙ﴿۲﴾ الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ
الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ﴿۳﴾ وَمَآ
اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ؕ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ﴿۴﴾

आयत न० 01 से 04

अलिफ़ लाम रा (इसका मतलब तो अल्लाह ही को पता है) **यह** (कुरआन) **एक किताब है जिस को हमने आप पर उतारा है ताकि आप** (इससे) **सब इन्सानों को उन के रब के हुक्म से** (कुफ़्र के) **अन्धेरों से निकाल कर** (ईमान व हिदायत की) **रौशनी की तरफ़ ले आओ यानी उस हस्ती के रास्ते की तरफ़ जो सब पर छाया हुआ** (और) **तारीफ़ के क़ाबिल है(01) अल्लाह ऐसा है कि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब उसी का** (पैदा किया हुआ) **है, और** (जब यह किताब अल्लाह का रास्ता बताती है तो) **बड़ी ख़राबी यानी बड़ा सख़्त अज़ाब है** (उन) **काफ़िरों को(02) जो** (इस राह पर न तो खुद चलते हैं बल्कि) **दुनिया की ज़िन्दगी को आख़रत के मुक़ाबिले पसन्द करते हैं** (इसलिए दीन की तलाश नहीं करते) **और** (न दूसरों को इस राह पर चलने देते हैं बल्कि) **अल्लाह की** (इस बताई) **राह से रोकते हैं और इसमें कमी** (यानी शक की बातों) **की तलाश में रहते हैं** (जिससे दूसरों को गुमराह कर सकें)**, ऐसे लोग बड़ी दूर की गुमराही में हैं** (यानी वो गुमराही सच्चे दीन से बड़ी दूर है)**(03) और** (इस किताब के अरबी ज़बान में होने से कुछ लोगों को यह शक होता है कि कहीं पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसे खुद न बना लिया हो तो) **हमने** (पहले) **सभी पैग़म्बरों को** (भी) **उन्हीं की क़ौम की ज़बान में**

पैग़म्बर बनाकर भेजा ताकि (उनकी ज़बान में) **उन से** (अल्लाह के हुक्मों को) **बयान करें** (कि बात आसानी से समझ में आजाए), **फिर** (बयान करने के बाद) **जिस को अल्लाह तआ़ला चाहें गुमराह करते हैं** (कि वो उन हुक्मों को नहीं मानता) **और जिस को चाहें हिदायत करते हैं** (कि वो उन हुक्मों को मान लेता है), **और वो ही** (सब बातों पर) **हावी है** (और) **हिकमत वाला है** (बस हावी होने की वजह से सब को हिदायत कर सकता था, मगर बहुत सी हिकमतों की वजह से ऐसा नहीं किया)(04)।

नोटः- क़ुरान का बिना मतलब समझे पढ़ना भी असर रखता है इस की तिलावत करने वाला कुफ़्र व शिर्क से बचा रहता है इसकी बरकत से शैतान के बहकाए में नहीं आता।
हदीस में है कि ''तुम लोग तीन वजह से अरब से मुहब्बत करो एक यह कि मैं अरबी हूं दूसरे यह कि क़ुरआन अरबी है तीसरे यह कि जन्नत वालों की ज़बान अरबी है। (तिबरानी)

وَ لَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا مُوۡسٰی بِاٰیٰتِنَاۤ اَنۡ اَخۡرِجۡ قَوۡمَکَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوۡرِ ۬ۙ وَ ذَکِّرۡہُمۡ بِاَیّٰىمِ اللّٰہِ ؕ اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ
لَاٰیٰتٍ لِّکُلِّ صَبَّارٍ شَکُوۡرٍ ﴿۵﴾ وَ اِذۡ قَالَ مُوۡسٰی لِقَوۡمِہِ اذۡکُرُوۡا نِعۡمَۃَ اللّٰہِ عَلَیۡکُمۡ اِذۡ اَنۡجٰىکُمۡ مِّنۡ اٰلِ فِرۡعَوۡنَ
یَسُوۡمُوۡنَکُمۡ سُوۡٓءَ الۡعَذَابِ وَ یُذَبِّحُوۡنَ اَبۡنَآءَکُمۡ وَ یَسۡتَحۡیُوۡنَ نِسَآءَکُمۡ ؕ وَ فِیۡ ذٰلِکُمۡ بَلَآءٌ مِّنۡ رَّبِّکُمۡ عَظِیۡمٌ ﴿۶﴾ وَ
اِذۡ تَاَذَّنَ رَبُّکُمۡ لَئِنۡ شَکَرۡتُمۡ لَاَزِیۡدَنَّکُمۡ وَ لَئِنۡ کَفَرۡتُمۡ اِنَّ عَذَابِیۡ لَشَدِیۡدٌ ﴿۷﴾ وَ قَالَ مُوۡسٰۤی اِنۡ تَکۡفُرُوۡۤا
اَنۡتُمۡ وَ مَنۡ فِی الۡاَرۡضِ جَمِیۡعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰہَ لَغَنِیٌّ حَمِیۡدٌ ﴿۸﴾

आयत न० 05 से 08

और हमने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) **को अपनी निशानियां देकर भेजा कि अपनी क़ौम को** (कुफ़्र व गुनाह के) **अन्धेरों से** (निकाल कर ईमान व नेकी की) **रौशनी की तरफ़ लाओ और उन को अल्लाह** (की नेमत व अज़ाब) **के दिन याद दिलाओ, बेशक उन में सबक़ हैं हर सब्र करने वाले शुक्र करने वाले के लिए** (क्योंकि नेमत को याद करके शुक्र करेगा और मुसीबत को याद करके आगे की परीशानियों पर सब्र करेगा)(05) **और** (उस वक़्त को याद कीजिए कि) **जब मूसा** (अ़लैहिस्सलाम) **ने अपनी क़ौम से कहा कि तुम अल्लाह तआ़ला का इनआम अपने ऊपर याद करो कि तुम को फ़िरऔन वालों से बचाया जो तुम को सख़्त तकलीफ़ें पहुंचाते थे और**

तुम्हारे बेटों को ज़बह (यानी क़त्ल) **कर देते थे और तुम्हारी औरतों** (यानी बेटियों) **को ज़िन्दा छोड़ देते थे** (ताकि उन से ख़िदमत का काम लें), **और इस** (मुसीबत और रिहाई दोनों) **में तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ा इम्तिहान है** (यानी मुसीबत में सज़ा थी और रिहाई में नेमत और दोनो बन्दे के लिए इम्तिहान हैं)(06) **और** (मूसा अलैहिस्सलाम ने यह भी कहा कि ऐ मेरी क़ौम) **वो वक़्त याद करो जब कि तुम्हारे रब ने** (मेरे वास्ते से) **तुम को ख़बर दी कि अगर** (मेरी नेमतों को सुन कर) **तुम शुक्र करोगे तो तुम को** (चाहे दुनिया में भी या आख़रत में तो ज़रूर) **ज़्यादा नेमत दूंगा और अगर तुम** (इन नेमतों को सुन कर) **नाशुक्री करोगे तो** (यह समझ लो कि) **मेरा अज़ाब बड़ा सख़्त** (है नाशुक्री में इस का ख़तरा) **है(07) और मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (यह भी) **कहा कि अगर तुम और सारी दुनिया के आदमी सब के सब मिलकर भी नाशुक्री करने लगो तो अल्लाह तआ़ला** (का कोई नुक़सान नहीं क्योंकि वो) **बिल्कुल बेपरवा है** (यानी उस को कोई ज़रूरत नहीं और अपनी हस्ती में) **तारीफ़ के क़ाबिल है**(08)।

नोटः- एक हदीस में है कि ईमान के दो हिस्से हैं आधा सब्र और आधा शुक्र। (बैहक़ी)

اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ ۬ۛ وَ الَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۛؕ لَا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ ؕ
جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْۤا اَيْدِيَهُمْ فِيْۤ اَفْوَاهِهِمْ وَ قَالُوْۤا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَ اِنَّا لَفِيْ شَكٍّ
مِّمَّا تَدْعُوْنَنَاۤ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿۹﴾ قَالَتْ رُسُلُهُمْ اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ
مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَ يُؤَخِّرَكُمْ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ قَالُوْۤا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ؕ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا عَمَّا
كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱۰﴾ قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ
عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَ مَا كَانَ لَنَاۤ اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَ مَا لَنَاۤ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَ قَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ وَ لَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَاۤ اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿۱۲﴾ؑ وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَاۤ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ فَاَوْحٰۤى
اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۳﴾ۙ وَ لَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَ خَافَ
وَعِيْدِ ﴿۱۴﴾ وَ اسْتَفْتَحُوْا وَ خَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿۱۵﴾ۙ مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَ يُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ ﴿۱۶﴾ۙ يَّتَجَرَّعُهٗ
وَ لَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَ يَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّ مَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَ مِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿۱۷﴾

आयत न० 09 से 17

(ऐ मक्के के काफ़िरों) **क्या तुम्हें उन लोगों** (के क़िस्से) **की ख़बर नहीं पहुंची जो तुम से पहले हो चुके हैं, यानी नूह** (अ़लैहिस्सलाम) **की क़ौम और** (हूद अ़लैहिस्सलाम की क़ौम) **आद और** (सालिह अलैहिस्सलाम की क़ौम) **समूद और जो लोग उन के बाद हुए हैं जिन को** (पूरी तरह) **सिवाए अल्लाह तआ़ला के कोई नहीं जानता,** (और वो क़िस्से ये हैं कि) **उन के पैग़म्बर उन के पास दलीलें लेकर आए तो उन क़ौमों** (में जो काफ़िर थे उन्हों) **ने अपने हाथ उन पैग़म्बरों के मुंह पर रख दिये** (यानी मानते तो क्या यह कोशिश करते थे कि उन को बात तक न करने दें) **और कहने लगे कि** (तुम्हारी सोच में) **जो हुक्म देकर तुम को भेजा गया है** (यानी तौहीद व ईमान) **हम उस को मानने से इनकार करते हैं और जिस बात की तरफ़ तुम हम को बुलाते हो** (यानी वो ही तौहीद व ईमान) **हम तो उस के बारे में बहुत बड़े शक में हैं जो** (हम को) **उलझन में डाले हुए** (हैं मतलब यह कि तौहीद व पैग़म्बरी का इनकार करते) **हैं(09) उन के पैग़म्बरों ने** (इस बात के जवाब में) **कहा क्या** (तुम को) **अल्लाह तआ़ला के बारे में** (यानी उस की तौहीद में) **शक** (व इनकार) **है जो कि आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला** (है यानी यह पैदा करना ही बहुत बड़ी दलील) **है, वो** (ही) **तुम को** (तौहीद की तरफ़) **बुला रहा है ताकि तुम्हारे** (पहले) **गुनाह मुआफ़ करदे और** (तुम्हारी उम्र के) **तय दिनों तक तुम को** (भलाई के साथ) **ज़िन्दगी दे, फिर उन्होंने कहा कि तुम** (पैग़म्बर नहीं हो बल्कि) **सिर्फ़ एक आदमी हो जैसे हम हैं** (और इन्सान पैग़म्बर नहीं हो सकता और न तुम अल्लाह की तरफ़ से हो, बल्कि) **तुम यह चाहते हो कि हमारे बाप दादा जिस चीज़ की इबादत करते थे** (यानी बुत) **उससे हम को रोक दो सो** (अगर पैग़म्बरी का दावा करते हो तो इन दलीलों के सिवा और) **कोई साफ़ मोजिज़ा** (लाकर) **दिखाओ(10) उन पैग़म्बरों ने** (इसके जवाब में) **कहा कि** (यह बात तो सच है कि) **हम भी तुम्हारे जैसे इन्सान हैं लेकिन** (इन्सान होना पैग़म्बरी में रूकावट नहीं क्योंकि पैग़म्बरी तो बड़े दर्जे का अहसान है और) **अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर चाहे** (वो) **अहसान करदे** (यानी पैग़म्बरी के लिए चुन ले), **और** (रहा मोजिज़ा तो) **यह बात हमारे बस की नहीं कि हम तुम को कोई मोजिज़ा दिखा सकें बिना अल्लाह के हुक्म के, और** (तुम्हारे सभी शकों का जवाब हो गया फिर अगर इस पर भी तुम न मानो तो हम तुम्हारी मुख़ालफ़त से नहीं डरते बल्कि अल्लाह पर भरोसा करते हैं और) **अल्लाह ही पर सब ईमान वालों को भरोसा करना चाहिए(11) और हम अल्लाह पर भरोसा क्यों न करें जब कि उसने** (हमारे ऊपर बड़ी महरबानी की कि) **हम को हमारे** (दोनो

जहान के नफ़े के) **रास्ते बताए, और तुम ने** (दुशमनी में) **जो हम को तकलीफ़ें पहुंचाई है हम** (अल्लाह भरोसे) **उस पर सब्र करेंगे, और अल्लाह ही पर भरोसा करने वालों को** (सदा) **भरोसा रखना चाहिए(12) और** (इन बातों को सुनने के बाद भी काफ़िर नर्म न हुए बल्कि) **उन काफ़िरों ने अपने पैग़म्बरों से कहा कि हम तुम को अपनी ज़मीन से निकाल देंगे या यह हो कि तुम हमारे दीन में फिर आजाओ** (लौट आने के लिए इसलिए कहा कि पैग़म्बरी के ऐलान से पहले वो उन को भी अपने दीन पर समझते होंगे)**, बस उन पैग़म्बरों पर उनके रब ने** (तसल्ली के लिए) **वही भेजी कि** (ये बेचारे तुम को क्या निकालेंगे) **हम** (ही) **इन ज़ालिमों को ज़रूर हलाक कर देंगे(13) और उन के** (हलाक करने के) **बाद तुम को इस ज़मीन में आबाद रक्खेंगे,** (और) **यह** (वादा आबाद रखने का) **हर उस आदमी के लिए** (आम) **है जो मेरे सामने खड़ा होने से डरे और मेरी** (सज़ा की) **धमकी से डरे** (मतलब यह कि जो मुसलमान हो)(14) **और** (पैग़म्बरों ने जब सुनाया कि तुमने दलीलों के फ़ैसले को नहीं माना तो अब अज़ाब से फ़ैसला होने वाला है तो) **काफ़िर** (पैग़म्बरों से अज़ाब की ख़बरें सुन कर भी न डरे बल्कि निडर हो कर वो) **फ़ैसला मांगने लगे और** (जब वो फ़ैसला यानी अज़ाब आया तो) **जितने बाग़ी** (और) **ज़िद्दी लोग थे वो सब नाकाम हुए** (यानी हलाक हो गये)(15) **इस** (दुनिया के अज़ाब) **के बाद** (काफ़िरों के लिए) **दोज़ख़** (का अज़ाब आने वाला) **है और उस को** (दोज़ख़ में) **ऐसा पानी पीने को दिया जाएगा जो कि पीप लहू** (के जैसा) **होगा(16)** (और) **जिस को** (प्यास से बेचैन होकर) **घूंट-घूंट करके पियेगा और** (गर्म व घिनौना होने की वजह से) **गले से आसानी के साथ उतरने की कोई सूरत न होगी और हर तरफ़ से उस पर मौत आरही होगी और वो किसी तरह मरेगा नहीं** (बल्कि यूं ही सिसकता रहेगा)**, और** (फिर यह भी नहीं कि ये ही अज़ाब रहे बल्कि) **उस** (आदमी) **को और** (ज़्यादा) **सख़्त अज़ाब का सामना** (बराबर) **हो**(ता रहे)**गा** (जिससे आदत पड़ने का शक ही नहीं हो सकता)(17)।

नोटः- मुसलमान की शान यह होती है कि वो अल्लाह के अज़ाब से डर कर गुनाहों से बचता है।

مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ﹻاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِىْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا
كَسَبُوْا عَلٰى شَىْءٍ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿۱۸﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ يَّشَاْ
يُذْهِبْكُمْ وَ يَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿۱۹﴾ۙ وَّ مَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿۲۰﴾ وَ بَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَىْءٍ ؕ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ

لَهَدَيْنٰكُمْ ۭ سَوَاۗءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ۝ؑ۲۱ وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ
وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ ۭ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّآ اَنْ دَعَوْتُكُمْ
فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ۭ اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَآ
اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ۭ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝۲۲ وَاُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۭ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۝۲۳

आयत न० 18 से 23

जो लोग अपने रब के साथ कुफ़्र करते हैं उन के (भले) **काम उस राख की तरह हैं जिस को तेज़ आंधी के दिन में तेज़ी के साथ हवा उड़ा लेजाए** (कि इस सूरत में राख का नामो निशान भी न रहेगा, इसी तरह) **उन लोगों ने जो कुछ** (भले) **काम किये थे उस का कोई हिस्सा** (यानी नफ़ा) **उन को न मिलेगा** (उस राख की तरह बर्बाद हो जाएगा), **यह भी बड़ी दूर की गुमराही है** (कि जिन कामों को नफ़े का समझा उन से कोई नफ़ा न हुआ)(18) **क्या तुम** (लोगों) **को यह बात पता नहीं कि अल्लाह तआला ने आसमानों और ज़मीन को बिल्कुल ठीक-ठीक** (यानी नफ़े के लिए) **पैदा किया है,** (बस जब वो ऐसी कुदरत वाला है तो) **अगर वो चाहे तो तुम सब को फ़ना करदे और नये लोग पैदा करदे(19) और यह बात अल्लाह को कुछ मुश्किल नहीं** (है बस जब नये लोगों को पैदा करना आसान है तो तुम को दोबारा पैदा कर देना क्या मुश्किल) **है(20) और** (अगर यह सोचो कि हमारे बड़े हम को बचा लेंगे तो सुन लो कि क़ियामत के दिन) **अल्लाह के सामने सब पेश होंगे फिर छोटे दर्जे के लोग** (यानी पीछे चलने वाले आम लोग) **बड़े दर्जे के लोगों से कहेंगे कि हम** (दुनिया में) **तुम्हारे पीछे चलते थे** (यहां तक कि दीन की जो राह तुम ने हम को बताई हम उसी पर चले और आज हम पर मुसीबत है) **तो क्या तुम अल्लाह के अज़ाब का कुछ हिस्सा हम से हटा सकते हो, वो** (जवाब में) **कहेंगे कि** (हम तुम को क्या बचाते ख़ुद ही नहीं बच सकते, हां) **अगर अल्लाह हम को** (कोई) **राह** (बचने की) **बताता तो हम तुम को भी** (वो) **राह बता देते,** (और अब तो) **हम सब के लिए दोनों सूरतें बराबर हैं चाहे हम बेचैन हों या सब्र करें** (दोनों सूरतों में) **हमारे बचने की कोई सूरत नहीं(21) और** (अगर इन झूटे ख़ुदाओं पर भरोसा हो तो सुन लो कि) **जब** (क़ियामत में) **हर बात का फ़ैसला हो जाएगा** (यानी जन्नत वाले जन्नत में और काफ़िर दोज़ख़ में भेज दिये जाएंगे) **तो** (सब दोज़ख़ वाले शैतान के पास जाकर कि

वो भी वहां मौजूद होगा बुरा भला कहेंगे कि तू तो डूबा ही था हम को भी अपने साथ डुबोया उस वक़्त) **शैतान** (जवाब में) **कहेगा कि** (मुझ को तुम्हारा बुरा भला कहना नाहक़ है क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला ने तुम से** (जितने वादे किये थे सब) **सच्चे वादे किये थे** (कि क़ियामत होगी और कुफ़्र से बर्बाद होंगे और ईमान से बख़्शे जाएंगे) **और मैंने भी वादे किये थे** (कि क़ियामत न होगी और तुम्हारा कुफ़्र का तरीक़ा भी सही है) **सो मैंने वो वादे तुम से झूटे किये थे** (और तुमने मेरे ग़लत वादों को सही समझा और अल्लाह के वादों को ग़लत समझा तो तुम अपने हाथों डूबे), **और मेरा तुम पर और तो कुछ ज़ोर चलता न था सिवाए इसके कि मैंने तुम को** (गुमराही की तरफ़) **बुलाया था सो तुमने** (अपनी मर्ज़ी से) **मेरा कहना मान लिया** (अगर न मानते तो मैं तो ज़बरदस्ती तुम को गुमराह न कर सकता था) **तो मुझ को** (ही सारा) **इल्ज़ाम न दो और** (ज़्यादा) **इल्ज़ाम अपने आप को दो,** (अब तो) **न मैं तुम्हारा मददगार** (हो सकता) **हूं और न तुम मेरे मददगार** (हो सकते) **हो, मैं ख़ुद तुम्हारे इस काम से नफ़रत करता हूं** (और इस को झूटा समझता हूं) **कि तुम इसके पहले** (दुनिया में) **मुझ को** (अल्लाह का) **साझी मानते** (थे कि इबादत में मेरा कहना मानते) **थे, बेशक ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब** (तय) **है** (बस जो तुम ने ज़ुल्म व कुफ़्र किया था उस की सज़ा तुम भुगतो और जो मैंने किया था उस की सज़ा मैं भुगतूंगा बस अल्लाह के सिवा जिन की इबादत करते हैं वो वहां कुछ काम न आएंगे)(22) **और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये वो ऐसे बाग़ों में दाख़िल होंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी** (और) **वो उनमें अपने रब के हुक्म से सदा-सदा रहेंगे** (और) **वहां उन को सलाम ऐसे किया जाएगा अस्सलामु अलैकुम** (यानी आपस में भी और फ़रिश्तों की तरफ़ से भी)(23)।

नोटः- बस जब इबलीस ही साफ़ जवाब दे देगा तो किसी और देवी देवता से मदद की क्या उम्मीद हो सकती है।

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ﴿٢٤﴾ تُؤْتِي
أُكُلَهَا كُلَّ حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا ۗ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٥﴾ وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ
كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ﴿٢٦﴾ يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۖ وَيُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ ۚ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ﴿٢٧﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ
اللَّهِ كُفْرًا وَأَحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۖ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾

आयत न० 24 से 29

क्या आप को पता नहीं (यानी अब पता हो गया) **कि अल्लाह तआला ने कैसी** (अच्छी और मौक़े की) **मिसाल बयान की है कलमाए तय्यिबा की** (यानी तौहीद व ईमान के कलमे की) **कि वो एक पाकीज़ा पेड़ की तरह है** (जैसे खजूर का पेड़) **जिस की जड़** (ज़मीन के अन्दर) **मज़बूती से जमी हुई है और उस की शाख़ें ऊंचाई में जा रही** (हैं कलमे की जड़ दिल में जमी है और उस की शाख़ें नेक काम हैं जो अल्लाह के सामने पेश करने के लिए आसमान में ले जाए जाते) **हैं(24)** (और) **वो** (पेड़) **अल्लाह के हुक्म से हर फ़सल में** (यानी जब उस की फ़सल आजाए) **अपना फल देता** (हो यानी ख़ूब फलता हो कोई फ़सल ख़ाली न जाती) **हो, और अल्लाह तआला** (इस तरह की) **मिसालें लोगों** (के बताने) **के वास्ते इसलिए बयान करते हैं ताकि वो** (लोग मतलब को) **अच्छी तरह समझ लें** (क्योंकि मिसाल से मतलब अच्छी तरह समझ में आ जाता है)(25) **और नापाक कलमे की** (यानी कुफ़्र व शिर्क के कमले की) **मिसाल ऐसी है जैसे ख़राब पेड़ हो** (जैसे हन्ज़ुल यानी इन्द्राइन का पेड़) **कि वो ज़मीन के ऊपर ही ऊपर से उखाड़ लिया जाए** (और) **उस को** (ज़मीन में) **कुछ जमाव न हो** (यानी कि काफ़िर का ऐतक़ाद कमज़ोर होता है)(26) **अल्लाह तआला ईमान वालों को इस पक्की बात** (यानी कलमाए तय्यिबा की बरकत) **से दुनिया में और आख़रत** (दोनों जगहों) **में** (दीन और इम्तिहान में) **मज़बूत रखता है, और** (इस नापाक कलमे की नुहूसत से) **ज़ालिमों** (यानी काफ़िरों) **को** (दोनो जगह दीन में और इम्तिहान में) **भटका देता है और** (किसी को मज़बूत रखने और किसी को भटकाने में हज़ारों हिकमतें यानी भेद हैं बस) **अल्लाह तआला** (अपनी हिकमत से) **जो चाहता है करता है(27) क्या आप ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत** (का शुक्र अदा करने) **के बजाए कुफ़्र किया** (यानी मक्के के काफ़िर) **और जिन्होंने अपनी क़ौम को तबाही के घर** (यानी जहन्नम) **में पहुंचाया(28)** (यानी उन को भी कुफ़्र सिखाया जिससे) **वो उस जहन्नम में दाख़िल होंगे और वो रहने की बुरी जगह है(29)।**

नोटः- हदीस में है कि जब क़ब्र में मोमिन से सवाल किया जाएगा तो ऐसी होलनाक जगह और सख़्त हाल में भी वो अल्लाह की मदद से इस कलमे पर क़ाइम रहेगा और लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्ररसूलुल्लाह की गवाही देगा। (इब्ने कसीर)

وَجَعَلُوا لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوا عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾ قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ﴿٣١﴾ اَللّٰهُ
الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ
لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ﴿٣٢﴾ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَ
النَّهَارَ ﴿٣٣﴾ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ؕ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾

आयत न० 30 से 34

और उन लोगों ने अल्लाह के (उस की ख़ुदाई में कुछ) **साझी बना लिये ताकि** (दूसरों को भी) **उस के दीन से गुमराह करें, आप** (उन सब से) **कह दीजिए कि थोड़े** (से) **मज़े उड़ालो क्योंकि आख़िर अन्जाम तुम्हारा दोज़ख़ में जाना है(30)** (और) **जो मेरे ख़ास ईमान वाले बन्दे हैं उन से कह दीजिए कि वो** (अल्लाह की नेमत का इस तरह शुक्र अदा करते रहे हैं कि) **नमाज़ की पाबन्दी रक्खें और हम ने जो कुछ उन को दिया है उसमें** (शरीअ़त के हिसाब) **से छुपा कर और ऐलानिया** (जैसा मौक़ा हो) **ख़र्च किया करें** (और यह काम) **ऐसे दिन के आने से पहले** (करलें) **जिसमें न ख़रीद बेंच होगी और न दोस्ती** (काम आएगी मतलब यह कि बदनी और माली इबादत को अदा करते रहें कि ये नेमत का शुक्र है)**(31) अल्लाह ऐसा है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और आसमान से पानी बरसाया फिर उसी पानी से तुम्हारे खाने के लिए फल पैदा किये, और तुम्हारे नफ़े के वास्ते कशती** (और जहाज़) **को** (अपनी कुदरत से) **तुम्हारे काम में लगा दिया ताकि वो अल्लाह के हुक्म** (व कुदरत) **से दरिया में चले, और तुम्हारे नफ़े के वास्ते** (नदी) **नहरों को** (अपनी कुदरत से तुम्हारे) **काम में लगा दिया** (ताकि उसी से पानी पियो और खेतों में पानी दो और उसमें कशती चलाओ)**(32) और सूरज और चान्द को** (अपनी कुदरत से) **तुम्हारे काम में लगा दिया जो लगातार चलते ही रहते हैं** (ताकि तुम को रौशनी और गर्मी का फ़ाइदा हो), **और रात और दिन को** (अपनी कुदरत से) **तुम्हारे काम में लगाया** (ताकि तुम को रोज़गार और आराम का नफ़ा मिले)**(33) और जो चीज़ तुम ने मांगी** (और वो तुम्हारे लिए ठीक हुई) **तुम को हर चीज़ दी, और** (ये चीज़ें ही क्या) **अल्लाह तआ़ला की नेमतें** (तो अनगिनत हैं कि) **अगर** (उन को) **गिनने लगो तो गिन नहीं सकते,** (मगर) **सच यह है कि आदमी बहुत ही बेइन्साफ़ बड़ा ही नाशुक्रा** (है अल्लाह तआ़ला की नेमतों की क़द्र और शुक्र

नहीं करता, बल्कि और उल्टा कुफ़्र व गुनाह करने लगता) **है**(34)।

नोटः- क़ियामत के दिन किसी की दोस्ती किसी के काम न आने का मतलब यह है कि सिर्फ़ दुनियावी दोस्तियां उस दिन काम न आएंगी। लेकिन जिन लोगो की दोस्ती और ताल्लुक़ अल्लाह और उसके दीन के कामों के लिए हों उन की दोस्ती उस वक़्त भी काम आएगी कि अल्लाह के नेक व मक़्बूल बन्दे दूसरों की सिफ़ारिश करेंगे जैसा कि हदीसों से साबित है।

وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّ اجْنُبْنِيْ وَ بَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ﴿۳۵﴾ رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ
كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَ مَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۳۶﴾ رَبَّنَاۤ اِنِّيْۤ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ
بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْـِٕدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْۤ اِلَيْهِمْ وَ
ارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ﴿۳۷﴾ رَبَّنَاۤ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَ مَا نُعْلِنُ ؕ وَ مَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ
شَيْءٍ فِي الْاَرْضِ وَ لَا فِي السَّمَآءِ ﴿۳۸﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبِّيْ لَسَمِيْعُ
الدُّعَآءِ ﴿۳۹﴾ رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿۴۰﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَ لِوَالِدَيَّ وَ
لِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿۴۱﴾

आयत न० 35 से 41

और (वो वक़्त भी याद कीजिए) **जब कि इब्राहीम** (अ़लैहिस्सलाम) **ने** (हज़रत इस्माईल और हज़रत हाजिरा को अल्लाह के हुक्म से मक्का के मैदान में लाकर रखने के वक़्त दुआ़ करते हुए) **कहा कि या रब मेरे इस शहर** (मक्का) **को अमन वाला बना दीजिए** (कि इसके रहने वाले अमन से रहें) **और मुझको और मेरी ख़ास औलाद को बुतों की इबादत से बचाए रखिये** (जैसा कि अब तक बचाए रक्खा)(35) **या रब मेरे** (मैं बुतों की इबादत से बचने की दुआ़ इसलिए करता हूं कि) **इन बुतों ने बहुत से आदमियों को गुमराह कर दिया** (यानी उन की गुमराही का सामान बने इसलिए डर कर आप की पनाह चाहता हूं और इनको समझाता रहूंगा) **फिर** (मेरे समझाने के बाद) **जो आदमी मेरे रास्ते पर चलेगा वो तो मेरा है** (और उसके लिए मुआफ़ी का वादा है ही)**, और जो आदमी** (इस बारे में) **मेरा कहना न माने** (तो उसको आप हिदायत दे दीजिए क्योंकि) **आप तो बहुत मुआफ़ करने वाले** (और) **बहुत रहमत वाले हैं** (कि उन को हिदायत देकर मुआफ़ी का सामान कर

दीजिए)(36) **या रब मेरे मैं अपनी औलाद को** (यानी इस्माईल अलैहिस्सलाम को और उन के वास्ते से उन की नस्ल को) **आप के इ़ज़्ज़त वाले घर** (यानी ख़ानाए काबा) **के पास** (जो कि पहले से यहां बना हुआ था और सदा से लोग उसका अदब करते आए थे) **एक** (छोटे से) **मैदान में जो** (पथरीला होने की वजह से) **खेती के क़ाबिल** (भी) **नहीं आबाद करता हूं या रब मेरे** (यहां इसलिए आबाद करता हूं) **ताकि वो लोग नमाज़ की** (ख़ास) **पाबन्दी रक्खें** (और चूंकि यह इस वक़्त छोटा सा मैदान है) **तो आप कुछ लोगों के दिलों को उनकी तरफ़ झुका दीजिए** (कि यहां आकर रहें ताकि आबादी अच्छी हो जाए) **और** (चूंकि यहां खेती नहीं है इसलिए) **उन को** (बस अपनी कुदरत से) **फल खाने को दीजिए ताकि ये लोग** (इन नेमतों का) **शुक्र करें**(37) **या रब हमारे** (ये दुआ़एं तो अपनी मुहताजी पेश करने के लिए है वर्ना) **आप को तो सब कुछ पता है जो हम अपने दिल में रक्खें और जो काम दिखा कर करें, और अल्लाह तआ़ला से** (तो) **कोई चीज़ भी छुपी नहीं न ज़मीन में और न आसमान में**(38) **सभी तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिसने मुझको बुढ़ापे में इस्माईल और इसहाक़** (दो बेटे) **दिये, बेशक मेरा रब दुआ़ का बड़ा सुनने वाला** (यानी क़ुबूल करने वाला) **है**(39) **या रब मेरे मुझ को भी नमाज़ की पाबन्दी करने वाला बना दीजिए और मेरी औलाद में से भी** (नमाज़ की पाबन्दी करने वाले कीजिए)**, या रब हमारे और मेरी** (यह) **दुआ़ क़ुबूल कीजिए**(40) (और) **या रब हमारे मुझे मुआ़फ़ कर दीजिए और मेरे मां बाप को भी और सब ईमान वालों को भी हिसाब होने के दिन** (यानी क़ियामत के दिन इन सब को मुआ़फ़ कर दीजिए)(41)।

नोटः- इन आयतों से दुआ़ के आदाब ये मालूम हुए कि बार-बार गिड़गिड़ाते हुए दुआ़ की जाए और उसके साथ अल्लाह तआ़ला की हम्द व सना भी की जाए इस तरह दुआ़ के क़ुबूल होने की उम्मीद बढ़ जाती है।

وَ لَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۬ؕ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ۙ﴿۴۲﴾ مُهْطِعِيْنَ
مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَ اَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ؕ﴿۴۳﴾ وَ اَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ
الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَاۤ اَخِّرْنَاۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَ نَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ اَوَ لَمْ تَكُوْنُوْۤا
اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ۙ﴿۴۴﴾ وَّ سَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَ تَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ

فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْأَمْثَالَ ﴿٤٥﴾ وَقَدْ مَكَرُوا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ۖ وَإِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُولَ
مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿٤٦﴾ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهِ رُسُلَهُ ۗ إِنَّ اللّٰهَ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ
غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٤٨﴾ وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ﴿٤٩﴾
سَرَابِيلُهُمْ مِنْ قَطِرَانٍ وَتَغْشٰى وُجُوهَهُمُ النَّارُ ﴿٥٠﴾ لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ ۚ إِنَّ اللّٰهَ سَرِيعُ
الْحِسَابِ ﴿٥١﴾ هٰذَا بَلَاغٌ لِلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوا بِهِ وَلِيَعْلَمُوا أَنَّمَا هُوَ إِلٰهٌ وَاحِدٌ وَلِيَذَّكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٥٢﴾

आयत न० 42 से 52

और (ऐ लोगो) **जो कुछ ये ज़ालिम** (काफ़िर) **लोग कर रहे हैं उससे अल्लाह तआ़ला को** (जल्दी अ़ज़ाब न देने की वजह से) **बेख़बर मत समझना,** (क्योंकि) **उन को सिर्फ़ उस दिन तक ढील दे रक्खी है जिसमें उन की आंखें** (अचम्भे और डर के मारे) **फटी रह जाएंगी(42)** (और वो हिसाब की जगह की तरफ़) **अपने सरों को ऊपर उठाए दौड़ते होंगे** (और) **उन की आंखें उन की तरफ़ हट कर न आएंगी** (यानी ऐसी टकटकी बन्धेगी कि आंख न झपकेंगे) **और उनके दिल** (डर से) **बदहवास होंगे(43) और** (जब वो क़ियामत का दिन आजाएगा फिर ढील न होगी बस) **आप उन लोगों को उस दिन** (के आने) **से डराइये जिस दिन उन पर अज़ाब आजाएगा फिर ये ज़ालिम लोग कहेंगे कि हमारे रब थोड़े दिनों तक हम को** (और) **मुहलत दे दीजिए** (और दुनिया में फिर भेज दीजिए) **आप का सब कहना मान लेंगे और पैग़म्बरों की ताबेदारी करेंगे,** (उस वक़्त उन से कहा जाएगा क्या हमने दुनिया में तुम को लम्बी मुहलत न दी थी और) **क्या तुम ने** (उस ढील की वजह से) **इससे पहले** (दुनिया में) **क़समें न खाईं थीं कि तुम को** (दुनिया से) **कहीं जाना ही नहीं है** (यानी क़ियामत का इनकार करते थे और इसपर क़समें खाते थे)**(44) जब कि तुम** (पहले) **लोगों के रहने की जगहों में रहते थे** (यानी उन की जगह आबाद हुए) **जिन्होंने** (कुफ़्र व क़ियामत का इनकार करके) **अपनी जानों पर ज़ुल्म किया था और तुम को यह भी पता चल गया था कि हमने उनके साथ कैसा सलूक किया था** (कि उन के कुफ़्र व इनकार पर उन को सज़ाएं दीं) **और हमने तुम्हें मिसालें** (भी) **दीं थीं** (यानी आसमानी किताबों में उन के क़िस्सों की मिसालें दी गईं थीं कि ऐसे कामों का क्या अन्जाम हुआ)**(45) उन लोगों ने** (जिन को उन के कुफ़्र व इनकार पर सज़ाएं दीं सच्चे दीन के मिटाने में) **अपनी सी बहुत ही बड़ी-बड़ी कोशिशें की थीं और उन की** (ये सब) **कोशिशें अल्लाह के सामने** (थीं उसके इल्म से छुपी न रह सकती) **थीं,**

और बेशक उन की कोशिशें ऐसी थीं कि (अजब नहीं) **उन से पहाड़ भी** (अपनी जगह से) **हिल जाएं** (मगर फिर भी सच्चाई ही कामयाब रही और उनकी सारी चालें बेकार हो गईं और वो हलाक किये गये)(46) **बस** (जब ये बातें मालूम हो गईं तो) **अल्लाह तआ़ला को अपने पैग़म्बरों से वादा ख़िलाफ़ी करने वाला न समझना** (क़ियामत के दिन उनके इनकार करने वालों के अज़ाब का वादा पूरा होगा) **, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा ज़बरदस्त** (ताक़त वाला और) **पूरा बदला लेने वाला** (है कि उस को कोई बदला लेने से नहीं रोक सकता) **है**(47) (और यह बदला उस दिन होगा) **जिस दिन ये ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल जाएगी और आसमान भी** (दूसरे बदल दिये जाएंगे इन आसमानों के सिवा क्योंकि पहली बार सूर फूंकने से सब ज़मीन व आसमान टूट फूट जाएंगे फिर दूसरे बार में नये सिरे से ज़मीन व आसमान बनेंगे) **और सबके सब एक** (और) **ज़बरदस्त अल्लाह के सामने पेश होंगे** (यानी क़ियामत के दिन बदला लिया जाएगा)(48) **और** (उस दिन) **तुम मुजरिमों** (यानी काफ़िरों) **को ज़ंजीरों में जकड़े हुए देखोगे**(49) (और) **उन के कुर्ते तारकोल के होंगे** (यानी सारे बदन पर तारकोल लिपटी होगी कि उसमें आग जल्दी और तेज़ी के साथ लगे) **और आग उन के चेहरों पर** (भी) **लिपटी होगी**(50) (यह सब कुछ इसलिए होगा) **ताकि अल्लाह तआ़ला हर** (मुजरिम) **आदमी को उसके किये की सज़ा दे,** (और चाहे ऐसे मुजरिम बहुत होंगे मगर) **बेशक अल्लाह तआ़ला** (को उन का हिसाब- किताब कुछ मुश्किल नहीं क्योंकि वो) **बड़ी जल्द हिसाब लेने वाला है**(51) **यह** (कुरआन) **लोगों के लिए हुक्मों का पहुंचाना है** (ताकि पहुंचाने वाले यानी पैग़म्बर की तस्दीक़ करें) **और ताकि उसके वास्ते से** (अज़ाब से) **डराए जाएं और ताकि इस बात का यक़ीन करलें कि वो ही एक सच्चा माबूद है और ताकि समझदार लोग नसीहत पाएं**(52)।

नोटः- एक हदीस में है कि क़ियामत के दिन लोग एक ऐसी ज़मीन पर उठाए जाएंगे जो ऐसी साफ़ व सफ़ेद होगी जैसे मैदे की रोटी। उसमें किसी की कोई निशानी (मकान, बाग़, पेड़, पहाड़, टीला वग़ैरह की) कुछ न होगी। (बुख़ारी व मुस्लिम)